ज्ञानामृत

सितम्बर, 1982
वर्ष 18 ❋ अंक 3

मूल्य 1.25

ब्र० कु० निर्वैर जी बारबोडोज़ के उपप्रधान मन्त्री भ्राता सेन्ट जोहन से मिलते हुए। ब्र० कु० मोहिनी जी तथा ब्र० कु० चन्द्रा जी साथ में बैठे हैं।

गांधी नगर में ब्र० कु० सरला गुजरात की राज्यपाल शारदाबेन मुकर्जी को स्नेह की सूचक राखी बांधते हुए।

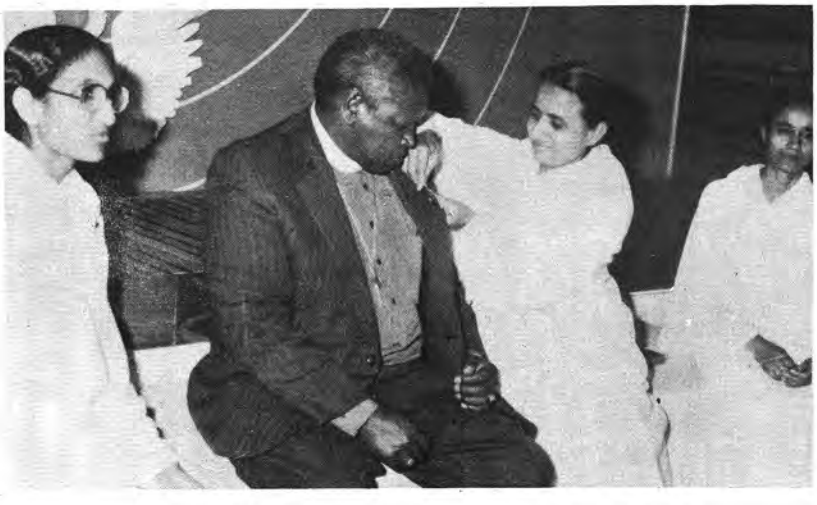

केन्या (अफ्रीका) के आर्चबिशप भ्राता कुरिया जी नेरोबी सेवा केन्द्र पर पधारे। उनको ब्र० कु० वेदान्ती बैज लगाते हुए।

मुख पृष्ठ से सम्बन्धित

(ऊपर) नई दिल्ली में भारत के राष्ट्रपति भ्राता जैलसिंह जी को ब्र० कु० सुन्दरी जी पावन राखी बांधते हुए, ब्र० कु० भाग टीका देते हुए। ब्र० कु० आशा जी, ब्र० कु० ब्रिजमोहन जी तथा ब्र० कु० सन्तोष जी साथ में हैं।

(नीचे) ब्र० कु० निर्वैर जी संयुक्त राष्ट्र संघ की ओर से स्वागत अवसर पर "निवानो पीस फाऊडेशन" के अध्यक्ष को आबू में ८३' में होने वाले शान्ति महासम्मेलन का निमन्त्रण देते हुए।

सचित्र समाचार

2

3

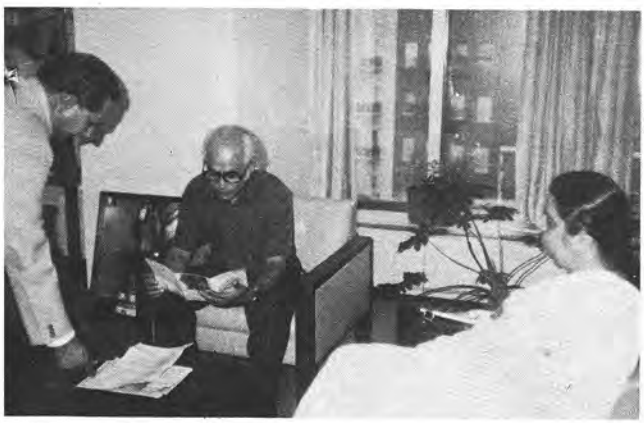

4

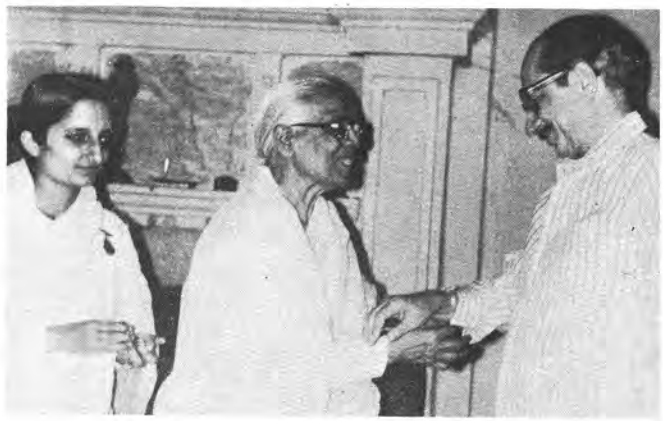

5

(1) गांधी नगर में गुजरात के मुख्य मन्त्री भ्राता माधव सिंह सोलंकी, ब्र० कु० सरला से स्नेह की सूचक राखी बंधवाने के पश्चात् रक्षाबन्धन पर ईश्वरीय सन्देश बड़े ध्यान से पढ़ रहे हैं। उनके साथ में गुजरात के गृहमन्त्री जी भी हैं।

(2) भुवनेश्वर में ब्र० कु० सन्देशी उड़ीसा के मुख्यमन्त्री भ्राता जे० बी० पटनायक को बड़े स्नेह से पवित्रता की सूचक राखी बांधती हुईं।

(3) पटना में बिहार के मुख्य मन्त्री भ्राता जगन्नाथ मिश्रा जी को राखी बांधने के पश्चात् आत्म स्मृति का टीका देती हुई ब्र० कु० निर्मल मणि जी।

(4) ब्र० कु० निर्वैर जी यूनिस्पेस (संयुक्त राष्ट्रसंघ) के महासचिव भ्राता यशपाल जी को १९८३ में आबू में होने वाले विश्व शान्ति महा सम्मेलन का निमन्त्रण दे रहे हैं। ब्र० कु० मोहिनी जी साथ में हैं।

(5) पटना हाईकोर्ट के मुख्य न्यायाधीश भ्राता एस० सरवर अली जी को ब्र० कु० निर्मल मणि स्नेह और पवित्रता की सूचक राखी बांधते हुए।

(1) ब्र० कु० निर्वैर जी बारबोडोज़ के बिशप भ्राता गोमेज़ से मिलते हुए। ब्र० कु० मोहिनी जी तथा ब्र० कु० चन्द्रा जी साथ में हैं।

(2) शिमला में हिमाचल प्रदेश के राज्यपाल भ्राता बैनर्जी को पवित्रता की सूचक राखी बांधती हुई ब्र० कु० अरुणा जी। ब्र० कु० इन्द्रा तथा अन्य भाई बहन साथ में खड़े हैं।

(3) पटना में बिहार के राज्यपाल को पावनता और स्नेह की सूचक राखी बांधती हुई ब्र० कु० निर्मलमणि जी।

(4) भूपाल में मध्य प्रदेश के राज्यपाल भ्राता भगवत दयाल शर्मा जी को राखी बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुई ब्र० कु० अवधेश जी।

(5) भुवनेश्वर में उड़ीसा के राज्यपाल भ्राता रघुनाथ मिश्रा जी बड़े स्नेह से ब्र० कु० कमलेश जी से राखी बंधवा रहे हैं।

(6) ब्र० कु० निर्वैर जी, तथा सान फ्रांसिस्को की ब्रह्माकुमारी बहन लास एन्जलज में डा० ए० एस० मरवाह को ईश्वरीय सन्देश देने के बाद साथ में खड़े हैं।

Regd. No. D (E)-70

अमृत-सूची

क्र० सं०	विषय	पृष्ठ	क्र० सं०	विषय	पृष्ठ
१.	संगम युग कमाई और भोगना का युग	... १	१०.	ग्लानि के बोल गले की माला के फूल	... १७
२.	कठिनाई इनकी और कठिनाई उनकी (सम्पादकीय)	... २	११.	क्रोध के क्षणों में	... १९
३.	"मूड शब्द" योगी का नहीं, देह अभिमान का है	... ६	१२.	असन्तुष्टता	... २१
४.	याद और प्यार	... ७	१३.	ज्ञान त्रिवेणी स्नान	... २२
५.	आध्यात्मिक सेवा समाचार (सचित्र)	... ९	१४.	तुम्हें पा के बाबा पाली खुदाई(कविता)	... २४
६.	कोई गरीब कोई साहूकार क्यों ?	... १३	१५.	अमृत वेला	... २५
७.	बनो फ़रिश्ता (कविता)	... १५	१६.	परमात्मा का अवतरण उलझनों को सुलझाने हेतु	... २८
८.	रूहानी स्नेह की शक्ति की जीवन में क्या आवश्यकता है ?	... १५	१७.	सेवा समाचार (सचित्र)	... २९
९.	प्रकृति की पुकार	... १६	१८.	कहानी एक राही की	... ३३
			१९.	धन जब माया बन जाता है(कविता)	... ३४
			२०.	आध्यात्मिक सेवा समाचार	... ३५

संगम युग कमाई और भोगना का युग

संगमयुग जितना ही कमाई का युग है, उतना ही भोगना का भी युग है। हम ब्राह्मण ही यदि श्रीमत की अवज्ञा करते तो कमाई के बदले सब कुछ गँवा देते हैं। अगर अवज्ञा है तो श्रापित होते, वरदाता से वरदान लेने के बजाए श्रापित होना यह भी सज़ा है। अतीन्द्रिय सुख नहीं, खुशी का अनुभव नहीं, उदासी है, तो यह भी सज़ा है। कई बच्चे बाप के साथ अपने सर्व सम्बन्धों का अनुभव कर खुशी में नाचते हैं, कइयों का किसी देहधारी से प्यार हो जाता, किसी में बुद्धि अटकती है तो खून के आँसू बहाते, पश्चाताप करते···यह भी सज़ा है।

२. यह ब्राह्मण जीवन है ही हम बच्चों के लिए मर्यादाओं पर चलने की जीवन। बाबा ने हमें श्रीमत की अनेकानेक मर्यादायें सुनाई हैं। पहली-पहली मर्यादा सुनाई—बच्चे सर्व सम्बन्ध एक बाप से रखो। अगर हम यह मर्यादा सूक्ष्म वृत्तियों में भी उलंघन करते तो इससे वायुमण्डल खराब होता है और उसकी फिर सज़ा भी मिलती है। लेकिन अगर किसी में थोड़ी बहुत कमज़ोरी है भी—फिर भी वह बाबा से सच्चा है, अपनी दिल की बात सच्चाई सफाई से बाबा को सुनाता है तो कहा जाता— सच्ची दिल पर साहेब राज़ी। उसे बाबा की दुआयें मिल जातीं, वह अपनी वृत्तियों पर विजय पा लेता। लेकिन अगर सच नहीं सुनाता—छिपाता रहता, और एक भूल के पिछाड़ी अनेक भूलें करता रहता तो उसकी भी बहुत कड़ी सज़ा मिलती है। बाबा ने जो भी श्रीमत दी है—उसको जीवन में पालन करना यह है वरदान पाना। श्रीमत की अवज्ञा करना अर्थात् श्रापित होना।

३. अगर उल्टा कर्म करके छिपाता है—तो उसकी दिनचर्या में और भी अनेक विकर्म होते रहते, झूठ बोलेगा, चिड़चिड़ायेगा, ईर्ष्या करेगा··· किसी से भी नाराज हो जायेगा··· एक विकर्म से और भी अनेक विकर्म होते जाते। फिर उनका ही संस्कार उनको खाता। भले वह नथिंग न्यू--ड्रामा भी कहें पर सच न बतलाने से वह संस्कार कड़ा होता जाता— इसकी रिजल्ट यह होती— वह बाबा के प्यार से, ब्राह्मण परिवार के प्यार से वंचित होता जाता। पढ़ाई से भी दिल टूटती जाती···अपने संस्कारों में मजबूत होता जाता। इससे की कमाई चट हो जाती है।

कठिनाई इनकी और कठिनाई उनकी

यह बात तो सर्व-मान्य है कि जीवन जीने के अनेक स्तर (Levels of existence) हैं। एक व्यक्ति तो ऐसा है कि वह घोर आसुरीयता के तल पर टिका है और दूसरा ऐसा है कि कुछ भक्ति भी करता है परन्तु विषय-विकार नहीं छोड़ता, और इस प्रकार, आसुरीयता की घोरता से कुछ ऊँचा उठा है। तीसरा ऐसा है कि उसमें कुछ वैराग्य भावना है और विकारों की भी उसमें हल्की मात्रा है, और चौथा ऐसा है कि जो पवित्रता की मस्ती में रमा हुआ है। इस प्रकार के स्तर स्वाभाविक हैं क्योंकि इस संसार में भाँति-भाँति के लोग हैं; उनकी भिन्न-भिन्न दृष्टि, वृत्ति, स्मृति और स्थिति है।

हम देखते हैं कि हरेक की निद्रा की स्थिति भी अलग-अलग है। एक व्यक्ति तो ऐसी घोर निद्रा में सोता है कि यदि गर्मी के मौसम में छाँव में सोने पर धीरे-धीरे उसपर कड़ाके की धूप आ जाए और उसकी हम टाँग हिलाएँ तो भी वह नहीं जागता; दूसरा व्यक्ति अलार्म (Alarm) लगाकर सो जाता है ताकि वह अमुक समय पर उठ जाए परन्तु जब अलार्म बजता है तो वह उसे बन्द करके निद्रा की दूसरी शिफ़्ट (shift) शुरू करता है और आवाज़ लगाए जाने पर चूं-चरां करके उठ जाता है। तीसरा व्यक्ति बिना किसी के उठाए स्वतः ही उठ जाता है और चौथे व्यक्ति की निद्रा में एक प्रकार की सात्विकता का समावेश होता है कि जिससे उसकी चेतना तमोगुण से पूर्णतः आच्छादित नहीं होती—गोया उसकी निद्रा में भी एक प्रकार की जागृति बनी रहती है।

योगी का जीवन-स्तर न्यारा होने से उसका व्यवहार भी न्यारा होता है

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि योगी का भी अपना ही एक जीवन-स्तर होता है। उसकी चेतना देह और देह के विषयों की ओर उन्मुख अथवा उनमें विलीन नहीं होती। भोगी को जिन भोगों में रुचि होती है, उसे वे भद्दे मालूम होते हैं। उनसे उसका मन हट चुका होता है जैसे कोई घोड़ा प्यास न होने पर पानी के निकट होने पर भी पानी नहीं पीता, वैसे ही उसको भी उन विषय-वासनाओं की तृष्णा नहीं होती। जैसे कई लोग अपने भोजन में मिर्च-मसाले नहीं मिलाते अथवा माँस-मदिरा को सम्मिलित नहीं करते वैसे ही काम-वासना का भोग भी उसकी जीवन-पद्धति में शामिल नहीं होता। **जैसे किसी सच्चे वैष्णव को माँसाहार एक मलेच्छ के व्यवहार जैसा लगता है अथवा किसी नियमी ब्राह्मण को स्नान किये बिना भोजन करने का प्रस्ताव अस्वीकार्य होता है, वैसे ही एक सच्चे योगी को 'काम' विकार एक पागलपन महसूस होता है। और यदि इसके लिए उससे कोई जिद करता है तो उसे ऐसा महसूस होता है जैसे उसे कोई अमरीका की सबसे ऊँची—१२० मंजिला—इमारत की उच्चतम अट्टालिका से धक्का देकर नीचे धराशायी करना चाहता है।** यदि लोग इस बात को सामने रखें कि योगी और भोगी के स्तर में ज़मीन-आसमान का अन्तर है तो योगी की वह बातें जो उन्हें अटपटी लगती हैं, वैसी अजीब नहीं लगेंगी।

अब मान लीजिए कि कुछ भक्ति मार्गीय लोग किसी उच्च योगी से कहते हैं कि—"भाई, आप शादी कर लो", और वह आनन्द-निमग्न एवं आत्म-स्थित योगी उत्तर देता है कि—"काम विकार तो नर्क का द्वार है", तो इस उत्तर की ओर भिन्न-भिन्न लोगों की भिन्न-भिन्न प्रतिक्रिया होगी। निम्नतम स्तर के लोग तो उस पर अट्टहास करेंगे और विवाह करने के लिए उस पर दबाव डालगे। भक्त श्रेणी के कुछ लोग कहेंगे कि···"निस्सन्देह, काम विकार है तो नर्क का द्वार ही परन्तु यह संसार ही ऐसा बना हुआ है कि इसमें थोड़ी-बहुत मात्रा में 'काम' वासना का भोग करना वर्जित नहीं है बल्कि इसे 'गृहस्थाश्रम' कहा गया है।" उनमें से कई लोग तो यह भी कह देंगे कि 'पुत्र के बिना तो मनुष्य की गति नहीं होती।' तीसरी श्रेणी के कुछ लोग ऐसे भी मिलेंगे जो यह कहेंगे कि "इस योगी के वचन तो सत्य हैं परन्तु इस संसार में पवित्र रह पाना हमारे लिए कठिन है।" चौथी कोटि के गिने-चुने और अल्पतम मात्रा में ही ऐसे लोग होंगे जो कहेंगे कि···"यह तो श्रेष्ठतम बात कह रहा है और अगर यह इस स्थिति को प्राप्त

कर लेता है तो यह महान् सौभाग्यशाली है; हमारा इसको नमस्कार है।"

इस प्रकार, भिन्न-भिन्न स्थिति होने के कारण लोगों की भिन्न-भिन्न आलोचना होंगी। अट्टहास, विरोध और अचम्भे के रूप में ही अधिकतम लोगों की प्रतिक्रिया होगी क्योंकि इस कलिकाल में वासना-भोग की ओर अधिकतम लोगों का झुकाव होता है। जिन पुराणादि ग्रन्थों को ये लोग मानते हैं, स्वयं उनमें ही लिखा हुआ है कि जब घोर कलियुग होगा तो बच्चा, बूढ़ा आदि···सभी गृहस्थाश्रम ही के होंगे और एक शूद्र वर्ण ही शेष रह जाएगा। इस कथन का भाव यही तो है कि ब्रह्मचारी भी दृष्टि, वृत्ति आदि से वासना-भोगी होंगे और वानप्रस्थियों तथा संन्यासियों का भी यह संस्कार नहीं मिटा होगा। ऐसी स्थिति में लोगों को योगी का वह उत्तर या तो आश्चर्य की न्यायी प्रतीत होगा और या अखरेगा ही।

जो व्यक्ति जैसा हो वह दूसरों को भी वैसा ही बनाने का यत्न करता है

संसार की यह रीति है कि जो व्यक्ति जैसा हो वह वैसा ही दूसरे को भी बनाने का प्रयत्न करता है। किसी को सिनेमा देखने का शौक हो तो वह दूसरों से भी कहता है···"चलो आज फ़िल्म देखकर आय।" किसी को आम प्रिय हों तो वह दूसरों को भी कहेगा कि···"आम तो खा लो, फिर तो यह ऋतु चली ही जाएगी।" इसी प्रकार भोगी लोगों का सारे-का-सारा जमघट बेचारे मासूम योगी पर टूट पड़ता है और उसे कहता है कि—"तुम्हारी शादी करने की आयु हो गई है; तुम शादी करो।"

अपनी बात मनवाने के लिये लोगों के विभिन्न पैंतरे

फिर लोगों का यह भी तो स्वभाव है कि वे अपनी बात को मनवाने के लिए सारे पैंतरे अख़्तियार करते हैं। अपनी बात मनवाने के लिए कई तो रूठ जाते हैं, कई अपनी नाराज़गी प्रकट करने के लिये बात-चीत करना छोड़ देते हैं; अन्य अपना रोष प्रकट करने के लिए रो पड़ते हैं या चिल्लाते हैं या भोजन ही नहीं करते और कुछेक तो ऐसे भी होते हैं कि सभी सम्बन्धियों को इकट्ठा करके घेराव डाल देते, पूरी छावनी लगाते और सभी प्रकार के शब्द-शस्त्रों से प्रहार करते हैं और स्वयं को मार डालने की धमकियां देते और हाथापाई पर भी उतर आते हैं। अफ़सोस है कि माया के ये मुरीद किसी के द्वारा पवित्रता का व्रत लेने पर अत्याचार तक से नहीं चूकते। सभी ऐसे लोगों के साथ मिल जाते हैं और योगी स्वयं को अकेला पाता है। वे एक-दूसरे से कहते···"यह बावरा हो गया है; इसे किसी ने बहका दिया है; या तो इस पर जादू कर दिया है। अभी तो यह कच्ची उम्र का है और भोला-भाला है और दूसरों की बातों में आकर शायद सारी उम्र संन्यासी बनने की यातना करने को मान बैठा है···।"

इस प्रकार "अपनी-अपनी ढपली, अपना-अपना राग" के अनुसार अथवा "जैसा-जैसा जीवन-स्तर, वैसा-वैसा प्रश्न-उत्तर"—इस सूक्ति के अनुसार हरेक व्यवहार करता है। हाय-हाय, किसी को इतनी भी दया नहीं आती कि यह स्वर्ग की ओर जाता है तो हम इसे नर्क की ओर न धकेलें! इसे कामाग्नि पर न जलाएँ। यह विष का प्याला नहीं पीना चाहता तो हम इसकी हत्या करने के निमित्त न बनें। बल्कि होता यह है कि रीति-रिवाज तथा कथित मर्यादा आदि की दुहाई देकर वे उसे भी विषय-वैतरणी में घसीट ले जाने का पूरा यत्न करते हैं और कोई महावीर, धीर, योगारूढ़ व्यक्ति ही उनकी चोटों और उनके प्रहारों को योग की ढाल से थामता हुआ बढ़ा चलता है और किसी भी मूल्य पर अपने महान लक्ष्य से विमुख होने के प्रस्तावों को नकार देता है।

सम्बन्ध पवित्र भी और अपवित्र भी; दैहिक भी और आध्यात्मिक भी

भोगी लोग कहते हैं—"पति और पत्नी का सम्बन्ध तो सृष्टि के आदि काल से चला आया है; तब यह योगी इस नियम की अवहेलना किस आधार पर करता है? वे अपने जीवन-स्तर के अनुसार ठीक ही सोचते हैं और ठीक ही यह प्रश्न करते हैं, परन्तु उन्हें यह मालूम ही नहीं कि सतयुग में दाम्पत्य जीवन पति और पत्नी के सम्बन्ध पर नहीं बल्कि धर्मपति और धर्मपत्नी के सम्बन्ध पर था अथवा पति देव तथा देव-पत्नी के सम्बन्ध पर टिका था और उसमें भोग

बल की ज़रा भी बू न थी बल्कि वह स्वच्छता, पवित्र स्नेह और कामातीत पद्धति के अनुसार था जिसका अति संक्षिप्त विवरण अभी भी अनेक धार्मिक ग्रन्थों में बिखरे मोतियों की तरह मिलता है।

इस विषय में समझने की एक बात और भी है, वह यह कि सम्बन्ध भी दो प्रकार के हैं—एक दैहिक और दूसरे आत्मिक। उदाहरण के रूप में हम परमात्मा को 'माता-पिता' आत्मा ही के नाते से तो कहते हैं। जो व्यक्ति बिल्कुल ही साँसारिक अथवा भोगी है, उसके लिए तो 'माता-पिता' जैसा कोई सम्बन्ध परमात्मा के साथ है ही नहीं, बल्कि जो दैहिक माता-पिता हैं केवल वही उसके लिये माता-पिता हैं। परन्तु जो व्यक्ति कुछ भक्ति-भावना वाला है, उसके लिए दैहिक माता पिता के अतिरिक्त 'धर्मपिता' (धर्म स्थापक) और 'परमपिता' (परमात्मा) से भी सम्बन्ध मान्य है, बल्कि उसका तो यह प्रयत्न रहता है, कि दैहिक माता-पिता के साथ उसका जो सम्बन्ध है, वह भी 'धर्मपिता' की शास्त्र-वर्णित मर्यादा के अनुसार हो। ठीक इसी प्रकार योगी का सम्बन्ध परमात्मा के साथ होता है जो ही उसकी आत्मा के 'माता-पिता' हैं और कल्याणकारी भी हैं; इसलिए वह परमात्मा की आज्ञा को किसी भी हालत में टालना नहीं चाहता और परमात्मा की आज्ञा तो यही है कि दैवी गुणों को धारण करो और विकारों का त्याग करो।

वास्तविक सम्बन्ध का ज्ञान होने पर दृष्टिकोण में अन्तर

सम्बन्ध के बारे में एक बात और भी है। मान लीजिए कि कोई प्राकृतिक प्रकोप होने पर किसी मजबूरीवश, देश पर आक्रमण होने के कारण या देश का बंटवारा होने से एक घर के सदस्य अथवा एक बाप के बच्चे बाप से तथा आपस में बिछुड़ गये थे। बड़े होने पर वे अलग-अलग स्थान पर जैसे-तैसे टिक गये। किन्हीं मित्रों ने उन दोनों के बीच बातचीत करा कर उनकी सगाई और उनका विवाह करने का प्रयत्न जारी किया और उन दोनों की बातचीत तय होने की नौबत भी आ पहुँची। दोनों ने इस सम्बन्ध के लिए 'हाँ' भी कह दी। परन्तु जब दोनों के माता-पिता का और जन्म-स्थान का अथवा आदि निवास का परिचय होने पर उन्हें यह मालूम होता है कि वे एक ही माता-पिता की सन्तान हैं जिनसे वे बाल्यकाल से बिछुड़ गये थे और इस प्रकार वे तो परस्पर बहन-भाई हैं, तब उनको सगाई या विवाह की बात झटके से ही भूल जाती है और पहले स्वीकारी हुई बात को भी अब वे क्रियान्वित करने से बिल्कुल इन्कार कर देते हैं। क्या तब उनका इन्कार करना गलत है? सभी विचारवान लोग कहेंगे—"नहीं।" परन्तु इस थोड़े-से समय में अन्तर क्या पड़ा? 'हाँ' से 'ना' क्यों हो गई? जो पति-पत्नी बनने जा रहे थे, वे भाई-बहन क्यों बन गये? जो लोग उनका विवाह करने जा रहे थे उन्होंने वह बात छोड़ क्यों दी? इसीलिये ही कि उन्हें उनके माता-पिता का परिचय मिल गया और उन्हें स्वयं में भाई-बहन का सम्बन्ध मालूम हो गया। इस पर भी कई मतवाले; नास्तिक और आचार-भ्रष्ट लोग आग्रह भी कर सकते हैं कि ···"कोई बात नहीं, शादी तो कर ही लो।" अब आप सोचिये कि दोनों में से मस्तिष्क किसका ठीक है और बात किसकी सही है?

ठीक इसी प्रकार, कुछ लोग ऐसे हैं जो अपने गाँव की हर कन्या को 'बहन' मानते हैं। कुछ और हैं जो अपने गुरु की हर शिष्या को अथवा गुरु की कन्या को अपनी 'बहन' मानते हैं। अन्य लोग केवल एक अपनी पत्नी को छोड़कर हर नारी को अपनी 'बहन' मानते हैं। यह बात हरेक के अपने-अपने जीवन-स्तर पर आश्रित है। मीरा का जीवन-स्तर ऐसा था कि उसे गिरधर के अतिरिक्त दूसरा कोई भी पुरुष 'पुरुष' ही नहीं प्रतीत होता था, बल्कि सब पुरुष भी नारियाँ ही प्रतीत होती थीं। उसका भक्ति का स्तर ही ऐसा था। सूरदास जी के स्थूल चक्षु बन्द हो जाने के बाव-जूद भी उनके मानस चक्षु के सामने 'बाल गोपाल' ही घुंघरू बाँध कर नाचते रहते थे। अब उन हरेक के जीवन-व्यवहार को तभी समझा जा सकता है जब उनके जीवन-स्तर को समझा जाए।

भाई-बहन तो सभी हैं ही, बनाने की बात नहीं है

ठीक इसी प्रकार, जिस योगी को अपने पिता (पर-

मात्मा) का परिचय मिल गया और यह भी मालूम हो गया कि अन्य सभी के भी वे ही पिता हैं और वास्तव में वे सब 'भाई-भाई', 'भाई-बहन' अथवा 'बहन-बहन' हैं तो क्या वह वासनात्मक शादी करके अपनी बुद्धि की बरबादी करेगा ? कदापि नहीं। वास्तव में जो लोग यह आरोप लगाते हैं कि अमुक संस्था पति-पत्नी को भाई-बहन बनाती है, उन्हें कहना तो यह चाहिए कि वो संस्था सबको 'योग-युक्त' बनाती है और उन्हें वास्तविक सम्बन्ध बताती है, परन्तु खेद है कि संस्था को श्रेय देने की बजाय वे श्राप देने को तैयार हो जाते हैं अथवा बुराई से निकालने वाले को बुरा बताते हैं। भाई-बहन बनाने की क्या बात है ? भाई-बहन तो सभी हैं ही—क्या इस सत्यता से कोई आध्यात्मवादी इन्कार कर सकता है ?

मान्य सिद्धान्त पर आचरण

एक बात कहकर हम इस चर्चा को समाप्त करना चाहते हैं। यदि कोई व्यक्ति स्वयं को 'योगी' कहे और पवित्र न रहे, अर्थात् ब्रह्मचर्य व्रत का पालन न करे तो लोग कहेंगे कि ये योगी कैसा है ? यह स्वयं को कहता तो 'योगी' है और ब्रह्मचर्य के अनिवार्य नियम का तथा पवित्रता का पालन नहीं करता है ! यह एक ओर तो भोग भोगता है और दूसरी तरफ कहता है कि "मैं योगी हूँ।" बाल योगेश्वर के बारे में लोग यही तो कहते हैं। परन्तु अगर कोई पूरी तरह से योग के नियमों पर चलता है और ब्रह्मचर्य व्रत का पालन करता है तो फिर लोग यह टीका करते हैं कि यह शादी क्यों नहीं करता ? अगर कोई आध्यात्मिक सिद्धान्तों को मानता है परन्तु उनके अनुसार चलता नहीं तो लोग यह आरोप लगाते हैं कि यह प्रैक्टिकल नहीं बल्कि उसका तो ज़बानी जमा-खर्च है और अगर कोई परमात्मा को 'पिता' मानते हुए और अन्य सभी को उसकी सन्तान मानते हुए विश्व-भ्रातृत्व के सिद्धान्त पर चलता है तो लोग कहते हैं—"इसका सिर फिर गया है। अरे भाई, इस सिद्धान्त को मानने का यह मतलब थोड़े ही है। सब ऐसा मानने लगें तो यह संसार कैसे चलेगा ?" दूसरी ओर वे यह कहते हैं कि "गृहस्थ चलाना बड़ा मुश्किल है, यह तो जंजाल है।"

कठिनाई इनकी और कठिनाई उनकी

फिर भी, जैसे कि हम सिनेमा देखने व माँसाहार करने वालों का उदाहरण दे आये हैं, उनकी तरह वे सबको अपने समान बनाना चाहते हैं। वे योगी की परिस्थिति को समझने की चेष्टा नहीं करते कि वह भी अपने जीवन-स्तर के अनुसार ठीक ही कह रहा है। योगी का सिर पहले नर्क की ओर फिरा था —अब भगवान ने स्वर्ग की ओर फेर दिया है। तो वह बेचारा क्या करे ? अगर वह भगवान की बात न माने तो ईश्वर की अवज्ञा का महापाप अपने सिर पर लेकर गोया पश्चात्ताप की राह पर चलना पड़ता है। अगर अपने 'मित्रों' व 'सम्बन्धियों' की बात न माने तो उनकी कड़ी-कड़ी बातें सुननी पड़ती हैं और वे तंग करते हैं। इस प्रकार योगी भी कठिनाई में है। अगर भगवान को बीच में रख कर, योगी की कठिनाई को समझ कर भलाई को सामने देख कर 'मित्र' और 'सम्बन्धी' योगी पर दया करें तो कितना ही अच्छा हो और उन्हें प्रभु का कितना शुभाशीष मिले। □

—जगदीश

सूचना

ज्ञानामृत का शुल्क अभी तक जिन्होंने नहीं भेजा है वे शीघ्र भेजें।

ज्ञानामृत का वार्षिक शुल्क	:	१४ रुपये
अर्द्ध वार्षिक	:	८ रुपये
विदेश के लिये	:	७५ रुपये

"मूड शब्द" योगी का नहीं, देह अभिमान का है

(दादी जी की क्लास से)

१. हम सब राजयोगी हैं—हमें कभी भी मूडी (Moody) नहीं बनना है। मूड (Mood) शब्द ही देह अभिमान को सिद्ध करता है। आज मेरी रुचि नहीं, आज सुस्ती है। आज क्लास कराने की रुचि नहीं है। आज ओवर टेन्शन (Over tention)है, आज चिड़चिड़ापन है, भय है, उदासी है, नाराजगी है, शमशानी वैराग है, जिद वा सिद्ध के वश हैं, यह सब अनेकानेक प्रकार की मूड योगी की नहीं होती हैं। योगी को किसी भी प्रकार का टेन्शन नहीं रहता। वह सदा प्रसन्न, सदा सन्तुष्ट, सदा ईश्वरीय नशे वा खुमारी में रहता है। उसमें आलस्य नहीं होता। निडर, निर्भय रहता है। सदा हर्षित रहता है। उसमें रियलाइज़ेशन (Realization) की शक्ति होती है। वह स्वयं को परख कर फौरन चेन्ज कर लेता है।

२. मूडी अर्थात् ज़िद्दी। ज़िद्द करने वाला कभी भी हर्षित नहीं रह सकता। वह स्वयं से भी सन्तुष्ट नहीं तो दूसरों से भी नहीं। चिड़चिड़ाता रहेगा। अपनी बात, अपनी मत पर रहेगा। उसमें सिद्ध करने का संस्कार होगा। यह भी बहुत कड़ा संस्कार है।ज़िद्दी इंसान समझाते भी समझता नहीं। वह कभी भी अपनी भूल को रियलाइज़ नहीं करता। इन सबकी जड़ है देह अभिमान। इसलिए बाबा ने कहा अभी तक भी कई बच्चों के अन्दर से तमोप्रधानता नहीं निकली है। किसी-किसी के अन्दर से प्रधानता निकली है लेकिन अभी तक तमो है। कोई मुश्किल ही रजो वा सतो तक पहुँचे हैं। सिलवर एज तक भी अगर नहीं पहुँचे तो जरूर दिन में कई प्रकार की मूडों के वश होते रहेंगे। जब बुद्धि गोल्डन बने तब भिन्न-भिन्न प्रकार के मूड खत्म हों।

३. देह अभिमान की बहुत बड़ी रचना है। पुरुषार्थ की लहर नहीं रहती। गुमसुम रहते। कभी-कभी बिल्कुल अकेलापन, नीरस जीवन का अनुभव करते। खाली-खाली, उदास। अपने को खोखला अनुभव करते। उसमें उमंग उत्साह के पंख नहीं रहते। मड बिल्कुल आफ़ हो जाती है। फिर मुख से भी ऐसा ही बोल निकलता रहेगा—भले यह सेवा कोई भी कर ले। मुझे तो यह काम पसन्द ही नहीं है। बाबा को ही तो याद करना है। काम करने की, सेवा करने की लहर ही खत्म हो जाती है। बिल्कुल दिल-शिकस्त हो जाते। ऐसे मूडी को कितना भी समझाओ लेकिन वह कभी भी अपने को रियलाइज़ कर परिवर्तन नहीं कर सकता। शक्तिहीन हो जाता है। उन्हें बोलो—योग कराओ, क्लास कराओ। बोलेगा कोई भी करा ले। आज मेरी तबीयत ठीक नहीं है। फिर अनेक बहाने बताना शुरू कर देते। इससे समझा जाता—इनका मूड आफ है।

४. मम्मा को जब कोई कहता था—आज मेरी मूड नहीं, आज मैं यह काम नहीं कर सकता तो मम्मा कहती थीं—आज इसके लिए कहते हो मूड नहीं कल कहोगे बाबा हमें ज्ञान सुनने की, क्लास करने की मूड नहीं, बाबा मैं तो आपका बनकर नहीं रहूँगा—मुझे तो दुनिया में जाने की मूड है···देह अभिमान के वश जो अनेक प्रकार के मूडों के वश रहते—उनके मुख से यह भी निकलता—कोई भी पद मिले, मुझे तो लालच नहीं है। कौन जानता है क्या पद मिलेगा। ड्रामा में तो हरेक की सीट फिक्स है···यह सब मूड आफ वालों के बोल हैं। किसी भी प्रकार की रुचि नहीं रहती। शमशानी वैराग आ जाता है। उन्नति की लहरें समाप्त हो जातीं।

५. अगर अच्छी मूड होगी अर्थात् मूड आन होगी तो कई नई-नई इन्वेन्शन भी खुद निकालेगा। फिर उसे सफल करने के लिए दिन-रात एक कर देगा। तबियत भी ठीक हो जायेगी। नींद फिटाकर भी काम कर लेगा। मूड नहीं तो अनेक बहाने निकल आते। तो अब हम सभी को प्रतिज्ञा करनी है कि इन माया के, देह अभिमान के अनेक मूडों को खत्म कर सच्चा योगी बनना है। जो इन सब देह अभिमान के मूडों को त्याग देते हैं उनके सामने कोई, कैसी भी बात आये लेकिन जैसे पानी पर लकीर। ▭

"याद और प्यार"

ले० ब्र० कु० रेवादास, बिलासपुर (हि० प्र०)

याद का मुख्य आधार स्तम्भ है प्यार। 'प्यार अन्धा होता है' यह लोकोक्ति प्रसिद्ध है। प्यार में न जात-पात, न रूप रंग और न ही लोक लाज दिखती है। प्यार की सीमा निर्धारित नहीं की जा सकती। प्यार ही याद का कारण बन जाता है। जहाँ प्यार है वहाँ याद रह कर हृदय को मीठे हिलोरे देती रहती है। जिससे प्यार होता उसकी हर वस्तु से भी प्यार सा हो जाता है। उसके खेत-खलियान, धन-सम्पत्ति, सम्बन्धी आदि सभी से स्वतः ही प्यार हो जाता है। प्यार में किये गये वायदे, बोले गये मधुर बोल, किये गये उपकार याद का आधार ग्रहण करते चले जाते हैं। प्यार में एक-दो की भावनाओं का बहुत ख्याल रखा जाता है। एक-दो को अधिक से अधिक सुख पहुँचाने, लाभ देने का ख्याल रहता। यथा, खाना खाने से पूर्व संकल्प उठता, पहले उसे खिलाऊँ फिर स्वयं खाऊँ। अर्थात् 'पहले आप', 'पहले आप' होती रहती।

प्यार में कोई विघ्न बाधक नहीं बन सकता। लगन विघ्न को मिटा देती है। प्यार एक शक्ति है, चुम्बक है, मानसिक कशिश है, सुखद अनुभूति है—अर्पणमयता है। प्यार से मीठा और शक्तिशाली संसार में और कोई बन्धन नहीं। प्यार में औपचारिकता नहीं होती—एक अधिकार होता है, अपनत्व होता है। 'तेरा सो मेरा' और 'मेरा सो तेरा।' बस! प्यार की परिभाषा अत्यन्त मूक है। जहाँ सच्चा प्यार है वहाँ न दिखावा है न छल-कपट! सच्चाई है, सफाई है, अपनत्व है। प्यार में थकावट कहाँ, नींद कहाँ, आलस्य कहाँ! प्यार जितना बढ़ता जायेगा याद उतनी ही गहरी, मीठी, स्थाई और अटूट होती जायेगी! सच्चाई तो यह है कि इतना गहरा प्रेम हो जाने पर याद जो एक बार आने लगती है वह फिर जाने का नाम नहीं लेती।

प्यार के सम्बन्ध में उपरोक्त वर्णित अनुभव के लगभग हम सभी अभ्यासी हैं। अब यदि इस स्तर पर हमारा अपने मीठे शिव बाबा से प्यार का प्रगाढ़ सम्बन्ध जुट जाये तो कोई कारण नहीं कि याद न जुट सके। स्नेह के इस मीठे बन्धन में फिर तो नींद भी फिट जाए, थकावट भी न रहे। जिगरी प्यार होने से फिर वही हृदेश्वर इस तन-मन का मालिक बन जाता है। तभी मनुआ भाव-विभोर होकर कह उठता है 'एक बाप-दूसरा न कोई।' अब हमें अपने से पूछना है कि क्या हमारा इतना दिली प्यार बाबा से है?

प्यार कैसे बढ़ाएं

वैसे तो प्यार किया नहीं जाता, हो जाता है। फिर भी कुछेक युक्तियों के द्वारा हम शिव बाबा से प्यार बढ़ा सकते हैं जो ही अन्ततोगत्वा याद की सूक्ष्म तार का काम करता है। प्रायः प्यार सुन्दरता, गुण, विशेषताएँ तथा अपने प्रति किये गये उपकारों के कारण उत्पन्न होता है। इन्हीं बातों का परस्पर आदान-प्रदान करने पर फलता-फूलता है। अब तनिक शिव बाबा के अति सुन्दर स्वरूप को मानस पटल पर लाकर निहारने का प्रयत्न करें तो महसूस होगा कि विश्व की सर्वोत्तम सुन्दरतम छवि यदि कोई है तो वह शिव बाबा ही है तभी तो उसे सत्यं शिवं सुन्दरम् कहा गया है और फिर जो इतना सुन्दर है वह केवल मेरा है! गुणों में सिन्धु भी वही है। मेरे लिये ही वह आया है। उसने हमें क्या से क्या बना दिया। विषय सागर से निकाल दिया, दुश्चिन्ताओं से बचा लिया, बुरी आदतों से बचा लिया, जीवन कमल पुष्प सम बना दिया, समय-समय पर परोक्ष-प्रत्यक्ष गुप्त मदद मिली आदि-आदि अनेक उपकार बाप ने हमारे प्रति किये हैं, कर रहा है और अन्त तक करने

के लिए बंधा हुआ है। ऐसा मनन-चिन्तन जो हृदय स्पर्शी हो, करने से स्वतः ही आत्मा ऐसे मीठे बाप, शिक्षक, सतगुरु, साजन, साथी अथवा जो भी सम्बन्ध मन को भाए, का धन्यवाद किये बिना न रह सकेगी और रह-रहकर उसकी अत्यन्त स्नेह सम्पन्न मधुर याद मन में हिलोरे लेती रहेगी। कौन है ये जिसने मुझ गिरे हुए को उठाया ! कौन है ये जिसने मुझे इतनी करोड़ आत्माओं में से चुनकर गले लगाया ! बस ! हृदय गद्-गद् हो उठता है। प्यार का एक ऐसा तूफान हृदय सागर में उमड़ जाता जो अविरल अश्रुधारा गंगा-यमुना बनकर प्यार के सागर में लीन होने के लिए लालायित हो उठती।

दोहरी मित्रता

प्यार एक तरफा नहीं होता। बाबा ने हमें अथाह दिया सो तो ठीक है पर हमने बदले में क्या किया, यह भी उतना ही महत्वपूर्ण है। मिलने के लिए दोनों ओर की कशिश चाहिए। परमात्मा शिव तो स्वभाव से भी और कर्त्तव्य से भी परमपिता होने के कारण हमें सुख देने के लिए, प्यार देने के लिए बंधा हुआ है परन्तु हमें भी प्रति उत्तर में उसकी श्रीमत पर चलना पड़े। किसी की दिल लेने के लिए दिल देनी भी पड़ती है तभी उस दिलाराम बाप के दिल तख्तनशीन बन सकते हैं। उसके कार्य में हाथ बटाना, उसकी बात मानना, हर तरह से सहयोगी बनना इत्यादि कुछ ऐसी बातें हैं जिन्हें प्रैक्टीकल जीवन में लाने से ही उसके प्रति प्यार उन्नत हो सकेगा। प्रातः उठने से लेकर रात सोने तक बाबा ने हम बच्चों को हर लौकिक-अलौकिक कार्य के लिए समय-समय पर श्रीमत दी है और देते ही रहते हैं। उसका शत्-प्रतिशत पालन मनो मिलन का प्रथम अग्रिम आधार बनता है। फिर जिससे मिलना होता है उसके स्तर अनुसार अपनी वेश-भूषा भी होनी ही चाहिए। मिलने का स्थान भी एकान्त और शान्त ही अच्छा लगता है तभी मिलन का सच्चा आनन्द लिया जा सकता है। तो इस संदर्भ में निराकार साजन से मिलने के लिए स्थूल काय वस्त्रों का प्रयोग निषेध है। वह भी नंगा है तो हमें भी नंगे होना पड़ेगा अर्थात् इस शरीर रूपी वस्त्र को यही खोलकर बुद्धि रूपी विमान पर सवार हो नंगे ही उस निर्जन स्थान, शान्त-एकान्त में जहाँ कोई संकल्प नहीं, कर्म नहीं और कर्मफल नहीं—ऐसे परमधाम व शान्ति धाम में केवल उस एक साजन से ही मिलन मनाएँ तो क्या ही आनन्द प्राप्त हो उसकी कल्पना करते ही मन यह सब कुछ लिखते-लिखते ही भाव विभोर हो उठता है। इस प्रकार प्रतिपल मिलन के आनन्द की इस सुखद अनुभूति को निरन्तर अग्रसर करते रहने से याद सहज-स्वाभाविक हो जाती है—ऐसा योगियों का अनुभव रहा है। असीम स्नेह द्वारा ही अधिक समय तक लव में लीन हुआ जा सकता है वही याद वास्तव में अधिक टिकाऊ होती है जिससे मन सहज एकाग्रता तथा एकान्तता का सुखद रसपान करने के लिए सदैव तत्पर रहता है। अतः बापदादा भी बच्चों को याद के साथ प्यार देते हैं जिनका परस्पर घनिष्ट सम्बन्ध है।

●●

विकर्म कैसे भस्म हों ?

सभी मनुष्य दुःख से निवृत्ति और सुख की प्राप्ति चाहते हैं। लेकिन दुःख से निवृत्ति तभी होगी जबकि पिछले पाप-कर्मों (विकर्मों) का खाता ख़त्म हो जाएगा और आगे के कर्म श्रेष्ठ होंगे। विकर्मों से छुटकारा पाने के लिए आवश्यक है कि मनुष्य को कर्म, अकर्म और विकर्म की गति का ज्ञान हो तथा सर्वशक्तिमान्, पतितपावन परमात्मा से बुद्धि की लग्न अथवा योग हो। 'योगाग्नि' से ही पिछले विकर्म दग्ध होते हैं तथा ईश्वरीय ज्ञान द्वारा ही भविष्य के कर्म श्रेष्ठ बनते हैं। अतः विकारी कर्म-बन्धन से मुक्त होकर कर्मातीत बनने के लिए ईश्वरीय 'ज्ञान और योग' ही एकमात्र साधन है।

1.

2

3,

4

5

6·

7

1 सहारनपुर में कृषि मन्त्री यशपालसिंह को ब्र० कु० प्रकाश इन्द्रा राखी बाँध रही हैं।

2. शिमला में ब्र० कु० अरुणा शिक्षा मन्त्री सन्तराम जी को राखी बाँधते हुए।

3. भोपाल में भारतीय जनता पार्टी के विधानसभा के नेता सुन्दर लाल पटवा को ब्र० कु० सरोज राखी बाँधते हुए।

4. कटक में ब्र० कु० कमलेश भ्राता रघुनाथ पटनायक, उड़ीसा के राजस्व मन्त्री को पावन राखी बाँधते हुए।

5. शिमला मे ब्र० कु० इन्द्रा राखी बाँधने के पश्चात् पी० डब्ल्यू० डी० मिनिस्टर भ्राता सुखदेव जी को प्रसाद दे रही हैं।

6. बिहार के स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मन्त्री भ्राता ललितेश्वर प्रसाद शाही को ब्र० कु० इन्द्रा राखी बाँधते हुए।

7. फिरोजपुर कैण्ट सेवा केन्द्र की बहन सीता, पंजाब के कृषि मन्त्री भ्राता काशीराम को आत्म स्मृति का तिलक देते हुए।

शिमला में ब्र०कु० अरुणा ले० जनरल एस के० सिन्हा जी को राखी बांधते हुए। साथ में ब्र०कु० इन्द्रा तथा अन्य भाई-बहन।

कलकत्ता में निर्मल शान्ता दादी जी न्यायाधीश पद्मा जी को राखी बाँध रही हैं, ब्र० कु० कानन बहन बाबा की याद में।

रायपुर के डी० आई० जी० भ्राता वेद प्रकाश खन्ना को ब्र० कु० विमला आत्म स्मृति का तिलक देते हुए।

बेलगाम में ब्र०कु० उषा भ्राता बर्मन (डि० इन्सपेक्टर जनरल आफ़ पुलिस) को राखी बाँधते हुए।

शिमला में ब्र० कु० अरुणा वेस्टर्न कमाण्ड के सेकण्ड लेफ्टीनेण्ट जनरल सुशील कुमार जी को राखी बाँधते हुए। पास में ब्र० कु० इन्द्रा टीका देने के प्रतीक्षा में।

कटक मे ब्र० कु० कमलेश उड़ीसा के शिक्षा मन्त्री भ्राता गंगाधर महापात्र को पावन राखी-बांधते हुए।

बिहार के पथ निर्माण एवं परिवहन मन्त्री भ्राता शंकर दयालसिंह को ब्र० कु० निर्मलमणि राखी बांध रही हैं।

अंजार सेवा केन्द्र पर ब्र० कु० उमा बहन सब रजिस्ट्रार भ्राता शिवदास जी को राखी बाँध रही हैं।

देहली विश्व विद्यालय के उपकुलपति वर्ल्ड रीन्युवल पत्रिका देखते हुए, ब्र० कु० चक्रधारी जी ने उन्हें राखी बाँधी।

नागपुर में मध्यवर्ती कारागृह में ब्र० कु० पुष्पारानी डी० आई० जी० भ्राता क० जी० महाजन को राखी बाँध रही हैं।

ब्र० कु० सरला जी मुख्य न्यायाधीश कर्नाटक राज्य, भ्राता चन्द्रशेखर जी को राखी बाँध रही हैं। पास में सरोज खड़ी हैं।

पूना पेटोडा सेण्ट्रल जेल में जेल सुपरिण्टेण्डेण्ट जे० ज० बीम को ब्र० कु० उर्मिल राखी बाँधते हुए, साथ में ब्र० कु० पुष्पा, गोविन्द भाई, कलू अन्य जेल अधिकारी दिखाई दे रहे हैं।

लखनऊ में ब्र० कु० सती बहन जे०डी० शुक्ला जी को राखी बाँध रही हैं।

जबलपुर में ब्र० कु० कमल मेजर जनरल टी० एस० वर्मा, जी०ओ०सी० म०प्र०, बिहार, उड़ीसा को राखी बाँधते हुए।

ग्वालियर की सेण्ट्रल जेल में जेलर सुपरिण्टेण्डेण्ट के० अग्रवाल जी को राखी बाँधने के पश्चात् शिव बाबा का चित्र सौगात में देते हुए ब्र० कु० विमला जी एवं ब्र० कु० प्रतिभा।

जालन्धर सुधार घर (डिस्ट्रिक्ट जेल) में ब्र० कु० निर्मला राज व रजनी कैदियों को राखी बाँध रही हैं।

नैनीताल में ब्र० कु० शीला भ्राता पी० सी० कुकरेती डिप्टी कलक्टर को राखी बाँधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए साथ में श्रीमती कुकरेती खड़ी हैं।

लखनऊ खुन खुन जी गर्ल्स इण्टर कालेज के प्रिन्सिपल को ब्र० कु० भगवती पावन राखी बाँध रही हैं, साथ में मधुबाला जी तथा अन्य स्कूल की अध्यापिकायें खड़ी हैं।

जयपुर में ब्र० कु० पूनम जी गणपत राय आई० ए० एस० स्पैशल सेकेट्री परसनल को राखी बाँधने के बाद आत्मस्मृति का तिलक लगाते हुए।

कोई गरीब कोई साहूकार क्यों ?

ब्र० कु० चक्रधारी, देहली

परमप्रिय शिव बाबा की प्रिय सन्तानो, आज तुम्हें हम एक ऐसी कहानी सुनाते हैं जिसकी गहराई में जाने से हमें ऐसी शिक्षा व प्रेरणा मिलेगी कि जिससे हमारा जीवन महानता के शिखर पर पहुँच सकता है।

बात कुछ सौ वर्ष पुरानी है। किसी नगर में एक धनी सेठ रहा करता था। उसके पास काफ़ी जमीन, जायदाद थी। अब वह बूढ़ा हो रहा था और अपनी ज़िन्दगी के दिन गिन रहा था। सोचता था कि न जाने मैं कितने वर्षों का मेहमान हूँ, बस २-४ वर्ष में ही इस जीवन की यात्रा पूरी हो जाएगी। सेठ जी की चार बहुएं थीं। सेठ जी सदैव यह सोचा करते कि मैं जीते जी किस बहू को घर की मालकिन बनाऊँ। परन्तु काफ़ी सोच विचार के उपरान्त भी वे यह निर्णय नहीं ले पा रहे थे। सोचते-सोचते दिन गुज़रते जा रहे थे। आख़िर उसे एक युक्ति सूझ ही गई।

एक दिन उसने अपनी चारों बहुओं को अपने पास बुलाया। उसने उन्हें थोड़े-थोड़े गेहूँ के दाने दिये और कहा इन्हें संभाल कर रखना, मैं अगले वर्ष तुमसे ले लूंगा। गेहूँ के दाने लेकर चारों अपने-अपने कमरे में चली गईं। बड़ी बहू ने सोचा कि ससुर जी का दिमाग बुढ़ापे में फिर गया है। अब कौन संभालेगा इनके गेहूँ के दाने और फिर इन्हें एक वर्ष तक याद भी कहाँ रहेगा ?—यह सोचकर उसने वे दाने खिड़की से बाहर फेंक दिये। दूसरी बहू ने सोचा कि ससुर जी ने ये दाने संभालने के लिए दिये हैं। अब ये थोड़े से दाने तो इधर-उधर हो जायेंगे तो क्यों न मैं अनाज के भंडार में ही इन्हें डाल दूं। जब मुझसे माँगेगे मैं उसमें से कुछ दाने उठाकर दे दूंगी। उन्हें यह पहचान थोड़े ही होगी ये वही दाने हैं या दूसरे हैं। यह सोचकर वह गेहूँ के दाने अनाज के भंडार में डाल आई। तीसरी बहू ने सोचा कि इतने वर्षों में यह छोटी-सी चीज़ तो ससुर ने संभालने के लिए दी है तो मैं इसे बड़ी हिफाज़त से रखूंगी। यह उनकी दी हुई अमानत है, मुझे इसको अच्छी रीति संभाल कर रखना चाहिए। यह सोचकर उसने वे गेहूँ के दाने एक सोने की डिब्बी में डालकर अपनी अल्मारी में रख दिये। सबसे छोटी बहू बहुत चतुर और समझदार थी। उसने वे गेहूँ के दाने अपने नौकर को दिये और उससे उन्हें बोने के लिग कह दिया। उसने कहा कि इनकी ठीक तरह से देखभाल करना। समय पर इन्हें जल, खाद आदि देना, जानवरों से भी इसकी सुरक्षा करना। उसने अपने मन में सोचा हुआ था कि इस प्रकार बो देने से न केवल ससुर जी द्वारा दिये गए दाने संभले रहेंगे अपितु कई गुना हो जायेंगे।

धीरे-धीरे समय बीतता गया और आख़िर एक वर्ष भी बीत गया। चारों बहुएँ गेहुँ के दानों की बात भूल चुकी थीं।

सेठ जी ने अचानक एक दिन चारों बहुओं को अपने पास बुलाया। कुछ देर यूं ही घर गृहस्थी के विषय पर चर्चा करते-करते उन्होंने उनसे गेहूँ के दानों के विषय में पूछा कि वे कहाँ हैं ? सबसे बड़ी बहू तो एकदम सोच में पड़ गई। उसने तो कभी सोचा ही नहीं था कि एक वर्ष के बाद सेठ जी उनसे गेहूँ के विषय में पूछेंगे। यही सोचकर तो उसने उन दानों को फेंक दिया था। उसे सोच में पड़ा देखकर सेठ जी ने उससे पूछा—"बहू क्या सोच रही हो। कहाँ हैं वे दाने जो मैंने तुम्हें पिछले वर्ष दिये थे ?" उसने उत्तर

दिया—"जी, वो तो मैंने फेंक दिये थे। मैंने सोचा कि एक वर्ष तक इन्हें मैं कहाँ रखूँगी।" सेठ जी ने फिर दूसरी बहू से पूछा कि तुम बताओ, तुमने उन दानों का क्या किया?" उसने झट जवाब दिया—कि मैंने तो अनाज को अनाज के भंडार में ही डाल दिया था।" सेठ जी अब तीसरी बहू की ओर मुड़े। उनके कुछ कहने से पूर्व ही बहू बोल उठी—"पिता जी, मैंने तो उन्हें बहुत संभालकर रखा हुआ है। वे मेरी अल्मारी में एक सोने की डिब्बी में रखे हुए हैं। आज्ञा हो तो ले आऊँ।" सेठ जी ने कहा—"जाओ, ले आओ।" आज्ञा पाकर जल्दी से वह उठी और दूसरे ही पल वापस आकर वह सोने की डिब्बी सेठ जी के हाथ में थमा दी। इसी बीच सेठ जी ने चौथी बहू से पूछा तो उसने कहा—"पिता जी, उन दानों को आप तक लाने के लिए मुझे १-२ बैलगाड़ियों की ज़रूरत है।" सेठ जी हैरानी से उसे देखते हुए बोले—"बैल-गाडी?" उसने कहा—"जी हाँ, क्योंकि मैंने उन दानों को ज़मीन में बोने के लिए भेज दिया था और अब वे थोड़े से दाने कई बोरी गेहूँ में परिवर्तित हो चुके हैं।" यह सुनकर सेठ जी का चेहरा खिल उठा।

कुछ ही क्षण बाद सेठ जी बोले—देखो, मैं बूढ़ा हो चला हूँ। मैं चाहता हूँ कि अपने जीते जी घर की ज़िम्मेवारी आप लोगों को सौंप दूँ। यह जानने के लिए कि किसको कौन-सी ज़िम्मेवारी सौंपी जाए, ऐसा सोचकर ही मैंने आप लोगों को वे गेहूँ के दाने दिये थे। अब आप सबके जवाब सुनकर मुझे निर्णय करना सहज हो गया है। चारों बहुएँ बहुत दत्त चित्त होकर सेठ जी बात सुन रही थीं। वे मन-ही-मन यह भी सोच रही थी कि न जाने उन्हें कौन-सी ज़िम्मेवारी सौंपी जाएगी। सेठ जी ने सबसे बड़ी बहू की ओर देखते हुए कहा कि "तुमने उन दानों की कद्र न जानी और उन्हें फेंक दिया। अतः तुम्हारी ज़िम्मेवारी घर की सफ़ाई आदि कराने की है।" दूसरी बहू की ओर देखते हुए सेठ जी बोले—तुम्हें अनाज की कद्र करनी आती है, अतः तुम्हारी ज़िम्मेवारी अनाज को संभालने की है।" अब तीसरी बहू की बारी थी। सेठ जी ने उसकी ओर देखते हुए कहा कि "तुम अच्छी रीति किसी चीज़ को संभाल सकती हो। तुमने उन दानों को सोने की डिब्बी में संभाल कर रखा, इसी प्रकार तुम धन को भी उतनी ही हिफाज़त से रख सकती हो। अतः तुम्हें इस घर के धन-दौलत की सुरक्षा करने के निमित्त रखा जाता है।" छोटी बहू को देखते हुए सेठ जी ने कहा—"तुम्हें इस घर की मालकिन बनाया जाता है क्योंकि तुम यह जानती हो कि उन्नति किस प्रकार की जा सकती है। थोड़ी वस्तु को बढ़ाया कैसे जा सकता है। मुझे विश्वास है कि मेरे मरने के बाद तुम इस घर में हर प्रकार की तरक्की करा सकती हो। अतः तुम्हें मैं इसकी चाबियाँ सौंपता हूँ।" यह कहकर सेठ जी ने चाबियों का गुच्छा उसे थमा दिया।

तो देखा बच्चो, किस प्रकार बुद्धि का इस्तेमाल करने से छोटी बहू घर की मालकिन बन गई। इसी प्रकार, कुछ लोग कहते हैं कि भगवान किसी को ग़रीब बनाता है, किसी को साहूकार, भगवान न्याय नहीं करता। परन्तु बच्चो, ऐसा नहीं है। भगवान जैसा न्यायकारी तो कोई हो नहीं सकता। उसे तो धर्मराज कहा गया है। उसके तो हम सभी बच्चे हैं। बाप तो सभी बच्चों को प्यार करते हैं और फिर वह तो परमपिता है। तो वह परमपिता परमात्मा हम बच्चों को एक ही समय पर, एक ही स्थान पर और एक ही ज्ञान देते हैं। लेकिन कुछ बच्चे ज्ञान एक कान से सुनते और दूसरे से निकाल देते हैं मानों कि फेंक देते हैं। कुछ बच्चे उसे ध्यान से सुनते हैं और कुछ-न-कुछ ग्रहण करते हैं। कुछ बच्चे उसे अपनी बुद्धि रूपी तिजोरी में संभाल कर रखते हैं, उसे व्यर्थ नहीं गंवाते। परन्तु कुछ ही बच्चे ऐसे होते हैं जो उस ज्ञान को सुनकर उस पर मनन चिन्तन करते हैं, उस ज्ञान-सागर की गहराई में जाते हैं और नये-नये रत्न निकालते हैं और फिर उससे अन्य आत्माओं की सेवा भी करते हैं जिससे वे दिन दूनी रात चौगुनी उन्नति करते जाते हैं और इसी के आधार पर उनका भविष्य उज्जवल हो जाता है। कहा जाता है—'ज्ञान आमदनी का ज़रिया है' (Knowledge is Source of Income)। इसी अनुसार जितना जो ज्ञान को धारण

करता है, उतना उसे भविष्य में अपने कर्मों का फल मिल जाता है। कोई विश्व का मालिक बन जाता है और कोई मध्यम वर्ग का बन जाता है और कोई बिल्कुल साधारण। अतः शिव बाबा के नूरे रत्नो, तुम भी ज्ञान सागर द्वारा दिये गये ज्ञान रत्नों को इतना ग्रहण करना कि विश्व-महारानी, विश्व-महाराजन पद को प्राप्त करना। अच्छा ओम शान्ति। ☐

बनो फ़रिश्ता

ब्र० कु० जगरूप, कृष्ण नगर, देहली

बनो फ़रिश्ता, उड़ो वतन में,
यही शिव का पैगाम...
ज्ञान-योग से पावन बनकर
चलना है निज धाम...
बनो फ़रिश्ता..... .....

बोझ छोड़ दो शिव पर अपना
दो माया को त्याग,
जीवन का बलिदान करो
जग को लगनी है आग,
दिव्य गुणों की खुश्बू भर लो
महके सारा जहान
बनो फ़रिश्ता.....

मन को जोड़ो परम पिता से
यही सुख का आधार,
परमपिता की श्रीमत ही
जीवन का सच्चा सार,
आपस में अब प्रेम बढ़ाओ
करो नहीं संग्राम...
बनो फ़रिश्ता.....

दुख से पीड़ित जन-जन को
शिव की सन्तान बनाओ,
कलियुग के इस मानव को
फिर से इन्सान बनाओ,
शक्ति लेकर परमपिता से
बन जाओ बलवान
बनो फ़रिश्ता..... ☐

रूहानी-स्नेह की शक्ति की जीवन में क्या आवश्यकता है ?

ब्र० कु० इन्दु, साउथ दिल्ली

❀ स्नेह एक पावन सम्बन्ध जोड़ता है।
❀ स्नेह पत्थर दिल को भी पिघला देता है।
❀ स्नेह सुख और शान्ति के अनुभव को बनाये रखता है।
❀ स्नेह में ही स्वयं को तथा अन्य को बदलने की शक्ति है।
❀ स्नेह में ही त्याग कराने की शक्ति है।
❀ स्नेह में ही संस्कारों को मिलाने की शक्ति है।
❀ स्नेह में ही बीती बातों को तथा कमियों को भुलाने की शक्ति है।
❀ स्नेह में ही दृष्टि वृति, वाणी और संकल्प को पवित्र बनाने की शक्ति है।
❀ स्नेह से सदा शुभ-चिन्तक बनकर अपनी उन्नति तथा दूसरों की उन्नति कर सकते हैं।
❀ मुश्किल को सहज करने की शक्ति भी स्नेह में ही है।
❀ सर्व समस्याओं का हल निकालने की शक्ति स्नेह में ही है।
❀ दूसरों के संकल्पों को झट से समझने की शक्ति स्नेह में है।
❀ स्नेह द्वारा पर-चिन्तन और व्यर्थ चिन्तन से बच सकते है।
❀ स्नेह से सहयोग बढ़ता है और एकता बढ़ती है।
❀ स्वच्छता और स्पष्टता भी स्नेह से आती है।
❀ सहन शक्ति भी स्नेह से ही बढ़ती है।
❀ सर्वप्रिय, प्रभु प्रिय स्नेह द्वारा ही बनते है। ☐

प्रकृति की पुकार

ब्र० कु० अनुराधा, नागपुर

ग्रीष्मावकाश में पहाड़ी प्रदेश का सैर करना कितना आल्हाददायक होता है। कुछ समय पूर्व की घटना, हिमालय की गोद में बसे रामपुर गाँव में हम रुके थे। शाम के समय किसी निर्जन चट्टान पर बैठे मैं अपने विचारों में खो गयी। आयु का लम्बा रास्ता अभी पूर्ण होने में न मालूम कितना समय है। गत जीवन के अनेक सुख दुख से भरे हुए दृश्य स्मृति पटल पर उभरने लगे। अनजाने मन पर उदासी का आवरण पड़ गया। पलकें उभर उठीं तो पाया प्रकृति पुकार कर कुछ कह रही है, प्रेरणा दे रही है।

आबू के शिखरों की आवाज कानों में गूंजने लगी। 'देवी !तुम कौन हो ? तुम अपने आपसे अपरिचित हो, इसीलिये उदास हो। सुनो, तुम न नर हो न नारी, पर सर्व शक्तिवान परमपिता परमात्मा की प्रिय संतान, शक्ति स्वरूप आत्मा हो न कि शरीर। अपने आपको पहचानो ! ज्ञान के प्रकाश से ही तुम्हारा अज्ञान अंधकार से आच्छादित जीवन प्रकाशित होगा, खुशियाँ तुम्हारे चरण चूमेगी।'

सोचने लगी प्रकृति कितनी महान् है। अपनी मूक भाषा में, निरन्तर कार्यरत रह, आदर्श बन मानव को कर्मयोगी का पाठ पढ़ाती है। सिर्फ कथनी ही नहीं पर करके दिखाती है। सूर्य की किरणें हर दिशा में फैलकर नवीन आशा, विश्वास चेतना का संदेश सुनाती हैं। 'देवी ! संगदोष से बच। मेरे प्रकाश में सर्व प्राणियों के कार्य कलाप चलते हैं; फिर भी मैं उनके कर्मों में लिप्त नहीं होती, न उनका अच्छा या बुरा किसी भी प्रकार का प्रभाव मुझपर पड़ता है। मैं तो निरंतर समभाव से प्रकाश देने का कार्य करती हूँ। इसी तरह तुम्हें भी बंधन मुक्त हो निरन्तर अथक सेवाधारी बन आत्मिक दृष्टि से कार्यरत होने से ही अतीन्द्रिय सुख की प्राप्ति होगी।'

हिमालय के उत्तुंग शिखर ध्यान मग्न योगियों की तरह अंतर्मुखता का तथा ऊंची स्टेज में रहने का पाठ मुझे पढ़ाने लगे। 'देवी ! अचल, अडोल, रहने से ही तुम जीवन में आने वाले तूफानों का सामना कर विजयी हो सकोगी।'

अविरत बहने वाली गंगा मुझसे कहने लगी। 'देख ! सागर से मिलने के लिये कितनी व्यग्र हूँ मैं ! कितनी उछल कूद है मुझमें, पर जब मैं सागर से मिल जाती हूँ; तब मैं अपना अस्तित्व खो सागर रूपिणी बन जाती हूं;उसमें समा जाती हूँ। इसी तरह हे देवी ! (आत्मा) तुझे भी परमात्मा के लव में लीन होने की आतुरता हो ? तुझे भी परमात्म स्वरूप बन विश्व कल्याण कारी बनना है।'

उमड़ते बादल जगत की क्षण भंगुरता का संदेश सुनाते हुए कहने लगे "देवी ! कभी हम साकार रूप में जलधर बनकर ऊपर उठते हैं तो कभी जल की धारा बनकर नीचे गिर जाते हैं। संसार में निरन्तर परिवर्तन का चक्र चलता रहता है। जो आज रंक है वह कल राव बनेगा। इसीलिये भौतिक साधनों से प्राप्त क्षणिक सुखों के उपभोग में अपना समय नष्ट न कर। शाश्वत सुख तो आत्मा और परमात्मा के मिलन से ही प्राप्त होगा।"

अन्धकार मयी रात्रि में काले मेघों के बीच चंचल चपला चमककर अन्धकार भरे मार्ग को प्रकाशित करने का सन्देश देने लगी।

इसी तरह प्रकृति का निरीक्षण करने में काफी समय बीत गया। ढलते सूर्य को देख मैं भी अपने स्थूल निवास स्थान की ओर लौट गयी। सोचने लगी मुझ आत्मा को भी अपने घर शान्ति धाम वापस जाना है। आध्यात्मिक ज्ञान के दीपक की प्रकाश रेखा में ही मानव अपने खोये हुए व्यक्तित्व अथवा आत्मा का वास्तविक परिचय पा सकता है। आत्मिक ज्ञान के प्रकाश में ही मानव माया के आवरणों को भेदता हुआ परम सत्य की ओर अग्रसर होता है। प्रकृति से अविरत साधना का मंत्र ले मैं अपने निवास स्थान पर पहुँच गयी।

□

ग्लानि के बोल—गले की माला के फूल

[ब्र० कु० सतीश कुमार, आबू पर्वत]

परमपिता परमात्मा निराकार शिव द्वारा ब्रह्मा तन से दिए जा रहे ईश्वरीय ज्ञान व राजयोग के अनुभवी आत्माओं को अनेकानेक ईश्वरीय शक्तियां प्राप्त हो जाती हैं। उन आत्माओं को अनेकानेक प्रकार की सामाजिक आलोचनाएं व व्यक्तियों की कटाक्षपूर्ण व्यंगात्मक भाषा के बोल उतने ही प्यारे लगते हैं जितने कि उनकी महिमा के बोल। राजयोगी आत्मायें निन्दा-स्तुति, मान-अपमान, हानि-लाभ, जीवन-मरण, यश-अपयश आदि सभी परिस्थितियों में स्वयं को सामान्य एवं एक-रस स्थिति में अनुभव करती हैं, क्योंकि राज-योग का लक्ष्य है ही सभी के प्रति आत्मिक सम्बन्ध रखते विश्व-बन्धुत्व की भावना जागृत करना।

परमपिता परमात्मा शिव ने ऐसी अनेक अपमान जनक स्थितियों को सामान्य अनुभव कराने वाली जो शिक्षायें दी हैं उनमें से कुछेक ज्ञान-बिन्दु इस प्रकार हैं :—

1. **ग्लानि का बोल—एक दर्पण**—ग्लानि का एक-एक बोल हमारे अन्दर छिपी कमज़ोरियों को स्पष्ट करता है। ग्लानि को सुनकर यदि हम उत्तेजित हो जाते हैं अथवा यदि हमारे मन में ग्लानि करने वाले व्यक्ति के प्रति घृणा भाव जागृत होता है तो उससे स्पष्ट है कि प्यार के सागर की संतान होकर भी हम प्रेम स्वरूप नहीं बने हैं अर्थात घृणाभाव को सम्पूर्ण समाप्त नहीं किया है। इस प्रकार ग्लानि के बोल हम में अन्तर्निहित कमजोरियों को एक दर्पण की भांति प्रदर्शित करता है।

2. **निन्दक एक वफादार मित्र**—ग्लानि करने वाला व्यक्ति सदैव हमारी कमजोरियों का वर्णन करता रहता है। इससे स्पष्ट होता है कि वह हमारा ऐसा वफादार मित्र है जो शीघ्रातिशीघ्र हमारी कमजोरियों को दूर करा देना चाहता है अर्थात हमारी बुराई को वह सदा शुभचिन्तक बन समाप्त करने का पूरा पुरषार्थ करता है। अतः ऐसे वफादार मित्र को सदा समीप रख गले से लगाकर चलना चाहिए।

3. **ग्लानि करने वाला—एक कुशल शिक्षक के रूप में**—ग्लानि का एक-एक बोल हमारे मानस पटल पर छप जाता है और वह सदा हमारे भुलाने से भी नहीं भूलता है हम प्रत्येक कार्य करने से पहले इस बात का सदा ध्यान रखते हैं कि हमारा कोई भी कर्म ऐसा न हो जिसके कारण ग्लानि करने वाला व्यक्ति हमारी ग्लानि करे। स्पष्ट है कि वह हमारे हर कार्य पर नियन्त्रण रखने व समझ-बूझकर कार्य करने की शिक्षा सदा प्रदान करता रहता है और हमारा ध्यान न होने पर भी हमारी कमजोरियों का साक्षात्कार कराता है।

4. **ग्लानि करने वाला व्यक्ति भविष्य-पथ-द्रष्टा**—ग्लानि करने वाला व्यक्ति सदैव हमें यह इशारा देता रहता है कि हमारा कोई भी कार्य निन्दनीय न हो। मान लीजिए आज वह कमज़ोरी मेरे में नहीं भी है जिसका वर्णन ग्लानि करने

वाला कर रहा है, फिर भी हमें सोचना चाहिए कि हमें वह भविष्य के प्रति सावधानी दे रहा है। इस प्रकार की कोई भी कमजोरी हममें पनप न सके। ग्लानि का बोल हमें कमज़ोरी का ज्ञान कराता हुआ भविष्य पथ भी प्रशस्त करता है।

5. **ग्लानि करने वाला व्यक्ति—सफल सुधारक**—ग्लानि करने वाला व्यक्ति हमें सदैव सफल सुधारक के रूप में देखना चाहिए वह हमारी कमज़ोरियों को परिलक्षित कराता हुआ हमें सुधारने के निमित्त बना हुआ है। ऐसा लगता है कि उसने यह बीड़ा उठाया है कि जब तक हम अपनी कमियां नहीं दूर करेंगे तब तक वह उसका वर्णन करता ही रहेगा। उसके ग्लानि करने के सहज भाव एवं चेहरे की आनन्दमयी भावाभिव्यंजना से स्पष्ट है कि वह अपनी वाणी द्वारा हमारे सुधारने के निमित्त सुखकारी बोल-बोलकर स्वयं सुख की अनुभूति कर रहा है, अर्थात् वह कमियों का सुधार करने के महान कार्य को करने वाली महान आत्मा है।

6. **ग्लानि का बोल—हमारी अपूर्णता का द्योतक**—हमें हर ग्लानि के बोल को गहनता से मनन करते हुए स्वयं से पूछना चाहिए कि "क्या मुझ में यह कमी है ?" वह कमी चाहे कुछ ही अंश-मात्र में क्यों न हो। रिंचक भी कमी, कमी ही कहलायेगी। अतः हमें अपनी सभी कमजोरियों को समाप्त कर सम्पूर्ण बनना ही है, हम आत्माओं का लक्ष्य ही है सम्पूर्ण बनना। जब हम सम्पूर्ण बन जायेंगे तो कोई भी आत्मा एक संकल्प भी हमारे प्रति ऐसा नहीं करेगी। इसलिए हमें अपने सम्पूर्ण स्वरूप को सामने रखते स्वयं को परिवर्तन करना चाहिए।

7. **ग्लानि का बोल—परख शक्ति का मापदंड**—ग्लानि का बोल हमारी अन्दरूनी कालिमा को स्पष्ट करता है। ग्लानि के बोल के समय हम ईश्वरीय शक्तियों को प्रयोग कर अपनी अवस्था की जांच कर सकते हैं कि कहाँ तक हमने ईश्वरीय शक्तियों को धारण किया है ? अगर ग्लानि के बोल सुनकर हम उत्तेजित हो जाते हैं, भावावेश में आ जाते हैं और उस व्यक्ति के प्रति घृणा उत्पन्न होती है तो यह साफ ज़ाहिर करता है कि हममें सहन शक्ति की कमी है।

8. **धर्मस्थापक आत्मा—मान शान का भिखरी नहीं**—दूसरे हमें यह सोचना चाहिए कि परमपिता परमात्मा द्वारा स्थापित एक सत्धर्म स्थापन करने में हम निमित्त मददगार आत्मा हैं। हमें जन-जन को परमात्मा के सत्य स्वरूप का बोध कराना है तथा एक सत्धर्म 'आदि सनातन देवी देवता धर्म' से 'विश्व-बन्धुत्व' और 'वसुधैव-कुटुम्बकम्' के सूत्र में सारे समाज को बांधकर एकता लानी है, अतः हम परमात्मा द्वारा धर्म स्थापना के कार्य में चुनी हुई आत्मायें हैं। जबकि स्वयं पिता परमात्मा की ही लोग अज्ञानतावश निन्दनीय शब्दों से ग्लानि करते हैं। (वैसे वे उसे ईश्वरीय लीला समझ परमात्मा की महिमा करना समझते हैं) तो हम तो मनुष्यात्मा हैं। हमें उनके शब्दों पर ध्यान न देते हुए उनके कल्याण का ध्यान रखना है। उदाहरण के तौर पर लौकिक में भी किसी का कोई निकटतम सम्बन्धी पागल हो जाता है और अपने पागलपन में वह ग्लानि तो क्या कुछ भी अनिष्ट कर डालता है तो भी परिवार के जन उसके नाना प्रकार के कुकृत्यों को सहन करते भी उसका इलाज कराते हैं अथवा शुभचिन्तक बन भलाई ही सोचते हैं। अतः हमें भी सर्व के शुभ-चिन्तक बन सन्मार्ग दर्शाना है।

9. **अवगुण उसका, परेशान मैं ?** यदि हम ग्लानि करने को एक बुराई के रूप में भी स्वीकार कर लेते हैं तो हमें सोचना चाहिए कि भले ग्लानि करना एक बुराई है, फिर भी वह बुराई उस

शेष पृष्ठ २० पर

"क्रोध के क्षणों में"

[ब्र० कु० आत्माप्रकाश, आबू]

ऐसा कौन प्राणी होगा जो क्रोध की अग्नि में जलने के बाद अपनी कायरता पर न रोता होगा योगियों के पथ को विष की तरह ज़हरीला बनाने वाली ये क्रोध अग्नि निश्चय ही घृणा के योग्य है।

क्रोध कमज़ोर पक्ष की निशानी है। कई लोग क्रोध को बलवान पक्ष समझ उसे तिलाँजली देना नहीं चाहते और वह कहते कि अगर हम इस प्रकार नहीं चलेंगे तो लोग हमें बुद्धू या असभ्य कहेंगे···बड़ा ही धृष्टता पूर्ण विचार है यह, जो स्वयं की, अन्य की, समाज की या देश की उन्नति में बाधक है। वास्तव में जो जितना बलवान होगा, उतना ही सहनशील होगा। बलवान व्यक्ति कभी भी अपने बल को क्रोध जैसे घृणित कर्म में नहीं गँवाता। कमजोर व्यक्ति अधिक क्रोधी होता है, वास्तव में वह अपनी कमज़ोरी को क्रोध द्वारा ही व्यक्त करता है।

कुछ क्षणों का क्रोध भी मन की बहुत अधिक संग्रहीत शक्ति का ह्रास करता है। ज्ञान-योग-मार्ग के पथिक को यह बात अच्छी तरह समझ लेनी चाहिए। जैसे क्रोध में मनुष्य दौड़ नहीं सकता, उसके पैर काँपेगें, वैसे ही क्रोधी मनुष्य भी ज्ञान मार्ग पर तेजी से नहीं दौड़ सकता। ज्ञानी आत्मा का क्रोध वशीभूत होना अर्थात् अपने अमूल्य खजाने को गंवार की तहर हीरों को गुलेल से उड़ाना है। क्रोधी मनुष्य चाहे रात दिन योगाभ्यास करें, उसे आत्म-उन्नति की अनुभूति नहीं हो सकती। इसलिए ज्ञानी आत्मा को चाहिए कि वह अपने अमूल्य खज़ानों को क्रोधाग्नि में न जलाएं।

क्रोधी व्यक्ति कभी भी ईश्वर प्रेमी नहीं बन सकता। प्यार का सागर प्रभू उन्हें ही प्यार करता है जो प्यार मूर्त्त हैं। ऐसे तो सभी ऊसके प्रेम के पात्र है तो भी प्रेम मूर्त्त आत्मा तो उस के नयनों का नूर है। क्रोध जन्म-जन्म के लिए प्रभू के दिल से नीचे उतारने वाला है। लोग कहते हैं 'प्रभू क्या है यह एक योगी को दखकर समझा जा सकता है। तो अगर योगी क्रोधी होगा तो लोगों के मन में भगवान की क्या छवि अंकित होगी, तो ऐसा क्रोधी योगी भगवान को भी कलंकित करने वाला होगा और वास्तव में तो क्रोध विष और योग अमृत सहचर नहीं हो सकते। क्रोध तो अन्तर को जलाता है, जब कि योग तो शीतल चित्त का विषय हैं।

कई मनुष्य दूसरों से काम कराने के लिए क्रोध को अपना संगी बना लेते हैं वो शिकायत करते हैं कि क्रोध के बिना वो अपने कार्यकर्ताओं को नियन्त्रण में नहीं रख सकते। यह उनके अनुभव की कमी है। वास्तव में जितनी कठिनाई किसी को स्वयं पर नियन्त्रण रखने में है, उतनी ही कठिनाई उसे अन्यों को नियन्त्रण रखने पर होगी। स्वयं पर नियन्त्रण रखने वाला तो विश्व को नियन्त्रित कर सकता है। जो इस गुह्य तथ्य के अनुभवी होंगे, वे अपने प्रशासन में क्रोध जैसे विषैले हथियार का प्रयोग नहीं करेंगे। वास्तव में तो

क्रोध, दूसरों को हमसे दूर करता है, वो मन से हमारे सहयोगी बन सकते हैं। क्रोध की अपेक्षा प्रेम का हथियार प्रशासन में अधिक सफल देखा गया है।

क्रोधी मनुष्य अपने को अधिक अकलमन्द समझता है, इसी कारण क्रोध करता है, परन्तु वास्तव में तो उस समय उसकी अकल मन्द हो जाती है। क्रोध से बुद्धि की स्वच्छता में किचड़ा पड़ जाता है, जो निर्णय व परख शक्ति का ह्रास कर देता है। इसीलिए योग जो स्वच्छ बुद्धि का विषय है, क्रोधी से दूर हो जाता है।

क्रोध से मनुष्य का व्यक्तित्व निखरता नहीं है, बिगड़ता है। क्रोधी मनुष्य को देख कर ही लोग उससे दूर भागते हैं। प्रभावशाली व्यक्ति तो रूहानियत से बनता है, रोब से नहीं।

ईर्ष्या, द्वेष व संकुचित विचार क्रोध आने के मुख्य कारण हैं। या जब कोई हमारी इच्छानुसार काम नहीं करता या हमारा निरादर करता है, तो मन की ज्वाला भड़क उठती है। परन्तु योगी को चाहिए कि वह धैर्यता से काम ले और क्रोध रूपी अजगर का शिकार न बने।

ज्ञानी-पन का लक्षण ही ये है, कि जब आत्मा विपरीत वातावरण या विपरीत बातों में स्वयं को सन्तुलन में रख सके। इसीलिए ज्ञानी आत्मा को चाहिए कि अपने विचारों को महान बनावे और ड्रामा के हर एक आत्मा के पार्ट के गुह्यता से जान कर शान्त व धैर्यता पूर्वक जीवन निर्वाह करे।

ज्ञान मनन इन मनोविकारों को जीतने में परम सहयोगी है। ज्ञान मनन से जीवन में महानता आ जाती है, दृष्टि कोण महान हो जाता है और आत्मा छोटी मोटी बातों से विचलित नहीं होती।

पृष्ठ १८ का शेष

ग्लानि के बोल—गलें की माला के फूल

व्यक्ति की है, मेरी तो नहीं। तो बुराई उसकी और परेशान मैं रहूं यह तो हमारी बुद्धिमत्ता नहीं है। यदि वह बुरा-भला कर्म कर रहा है तो वह उसका फल पायेगा। उसके अवगुण को देख मैं परेशान क्यों?

10. **निर्धारित पार्ट का ज्ञान**—हम ईश्वरीय ज्ञान के आधार पर यह भलीभांति समझते हैं कि हर आत्मा इस विश्व नाटक में मिले हुए स्थिति अनुरूप निश्चित भूमिका अदा कर रही है। यदि संकल्प करते हैं कि उसको ऐसा नहीं करना चाहिए। तो इससे स्पष्ट है कि विश्व नाटक के रचयिता पिता परमात्मा द्वारा रचित नाटक में कुछ सुधार करना चाहते हैं। जैसे लौकिक जीवन में सिनेमा देखते हुए व्यक्ति कभी भी ऐसा संकल्प नहीं कर सकता कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए क्योंकि वह जानता है यह नाटक बना हुआ है। ठीक उसी प्रकार निन्दक के कार्यों को देखकर हमें यह सोचना चाहिए कि इस विश्वनाटक में उसे ऐसा ही पार्ट मिला है।

11. **परिचिन्तन पतन की जड़ है**—परमपिता परमात्मा ने सदैव हमें आत्मचिन्तन करने की शिक्षा दी है। आत्मचिन्तन ही उन्नति की सीढ़ी है, स्वयं को सम्पन्न बनाना हमारा लक्ष्य है। स्वयं की सम्पन्नता के फलस्वरूप ही हम दूसरों को सम्पन्न बनने की प्रेरणा दे सकते हैं। इसलिए हमें आचरण करना है न कि आचार्य बनना है। क्योंकि स्वपरिवर्तन से ही विश्वपरिवर्तन होगा।

अतः हमें सदा दूसरों के प्रति शुभभावना रखते हुए स्वयं की कमियों को दूर करना है।

असन्तुष्टता

[ब्रह्माकुमार सुभाष, उज्जैन]

सन्तुष्टता, स्वयं को सम्पन्न बनाने का साधन है। सदा सन्तुष्ट अर्थात् निर्विघ्न। सन्तुष्टता के आगे-विघ्नों का आना ही अनुभव नहीं होता है। स्वयम् का परीक्षण करना आसान है कि मैं कहां तक सन्तुष्ट हूं ? व्यक्ति, प्राप्ति और परिस्थितियों से सन्तुष्ट हूँ ? परन्तु सन्तुष्टता की चैकिंग (checking) अपने पर करके रह जाना—सम्पूर्णता नहीं है। 'सन्तुष्टता' अर्थात् स्वयम् भी सन्तुष्ट और मेरे कर्म, बोल, संकल्प, व्यवहार, आचरण से अन्य आत्माएं भी संतुष्ट हों।

'योगी', सदा स्वयम् से संतुष्ट रहता ही है, साथ ही औरों को भी संतुष्ट करने वाला होता है। 'योगी' अर्थात् 'निर्माणचित्त।' योगी की एक विशेषता है कि वह प्रदूषण को हटाने वाला और रूहानी बगीचे को लगाने वाला होता है अर्थात् जहां पहुँचे—योगी—वहां सर्व में संतुष्टता की लहरें—लहरा जायें।

मैं, अपने कर्म, बोल, संकल्प से संतुष्ट हूँ—ऐसा निरीक्षण तो आवश्यक है ही साथ ही यह भी सोचना और निकालना चाहिए कि मेरे कर्मों से कोई असंतुष्ट है ? यहां हम पर दर्शन, पर-चिंतन की बात नहीं कह रहे हैं क्योंकि परदर्शन परचिंतन वाला सदा नकारात्मक चिंतन से ओत प्रोत रहता है। निराकरण, निवारण, शुभ भावना, कामना से उसको कोई सरोकार नहीं होता है। कौन मुझ से असंतुष्ट है ? यह है आत्म चिंतन की शाखा क्योंकि इसमें स्वप्रति और अन्य आत्मा प्रति शुभ भावना और कल्याणकारी दृष्टिकोण है।

यह तो निश्चित ही है कि कोई भी व्यक्ति, किसी से भी असंतुष्ट है तो वह असंतुष्टता का बीज ईर्ष्या, घृणा, राग, द्वेष का वृक्ष उपजा देगा। अर्थात् असंतुष्ट व्यक्ति का पहला कदम ही होगा कि वह जिससे असंतुष्ट है उसकी ग्लानि आलोचना करना। इसलिए समय रहते उससे असंतुष्टता का कारण ज्ञात कर लेना चाहिए। जहां तक हो सके मर्यादित, रूहानी व्यवहार से संतुष्ट करने का प्रयत्न करना चाहिए ताकि वह सूक्ष्म पापकर्मों की वृद्धि से बच जाय और वातारण को दूषित होने से बचाया जा सके।

किसी भी असंतुष्ट को संतुष्ट करने के दो साधन हैं। (१) उस व्यक्ति को निष्कासित तिरस्कृत (Neglect) मत कीजिए। असंतुष्ट आत्मा से किनारा नहीं करना चाहिए। किनारा करने से वह ग्लानि कम कर देगा ऐसा नहीं हैं। ऐसी आत्माओं के और नज़दीक, संबंध और रुहानी स्नेह में रहना चाहिए। अपने रुहानी स्नेह, नम्रता मधुरता से धीरे-धीरे उसके मन से, हमारे प्रति असंतुष्टता को भस्मीभूत करने का भागीरथ प्रयत्न करना चाहिए। हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए कि कोई भी मुझ से असंतुष्ट न हो। किनारा करना अर्थात् स्वयम् में कमज़ोरी है। किनारा करना—किसी में भी परिवर्तन लाने का साधन नहीं है। भले कीई कितना भी मुझसे किनारा करे आखिर

शेष पृष्ठ २३ पर

ज्ञान त्रिवेणी स्नान

[ब्र० कु० नारायण लाल सिंघल, एडव्होकेट, इन्दौर]

भक्ति मार्ग में जल की त्रिवेणी में स्नान करने की बड़ी महिमा गाई गई है। आज हम आपको ज्ञान त्रिवेणी में स्नान कराते हैं जिसमें यदि आप अमृतबेले के समय भावपूर्ण होकर योग रूपी स्नान करेंगे तो आपके बहुत से विकर्म (पाप) समाप्त होकर आपको बहुत हल्कापन व आनंद की प्राप्ति होगी।

जैसे त्रिवेणी में तीन नदियों अर्थात् गंगा, यमुना और सरस्वती का संगम बताया जाता है वैसे ही ज्ञान त्रिवेणी में परमपिता शिव के ब्रह्मा मुख से तीन महावाक्य रूपी धाराएं निकली हैं—(१) वाह रे बाबा (२) वाह रे ड्रामा और (३) वाह रे मैं और मेरा भाग्यशाली पार्ट।

(१) वाह रे बाबा—

जब हम इस महावाक्य पर विचार मंथन (स्नान) करते हैं तो हमारे मन में यही विचार आते हैं कि हमारा बाबा सूक्ष्मातिसूक्ष्म बिन्दु है लेकिन वह गुणों का सिन्धु है। वह ज्ञान का सागर है, प्यार का सागर है, आनंद का सागर है और समस्त शक्तियों का भी सागर है। उसमें कितना प्यार भरा हुआ है कि इतना महान होते हुए भी वह हमें प्यारे बच्चे, मीठे बच्चे, सिकीलधे बच्चे कहकर हमेशा याद प्यार देता है, उसमें कितना ज्ञान भरा हुआ है कि उसके एक एक महावाक्य की अनमोल कीमत है और वह सदैव इन ज्ञानरत्नों से हमारी झोली भरता रहता है, वह कितना शक्तिवान है कि वह हमारे इस पापमय जीवन को पुण्यमय जीवन में बदल देता है और इस पापमयी कलियुगी सृष्टि को पुण्यमयी सतयुगी सृष्टि में परिवर्तन कर देता है; उसको जब हम एकाग्र मन से याद करते हैं तो हमारा हृदय गदगद होकर आनंद से भर जाता। हमारा शिवबाबा कितना निरंहकारी एवं नम्र है कि वह कहता है कि बच्चों मैं तुम्हारा अत्यन्त आज्ञाकारी सेवक (Most obedient servant) हूं और तुम्हारे बुलाने से इस कलियुगी सृष्टि में आकर धोबी की तरह तुम्हारे पापों को धोता हूं। बाबा कितना उदार है कि वह कहता है कि बच्चो तुम कोई चिन्ता मत करो और अपने देह के सब धर्मों को त्याग कर मेरी शरण में आ जावो तो मैं तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के सब पापों को नष्ट कर दूंगा। ऐसे बाबा को हमें कितना धन्यवाद देना चाहिये, कितना शुक्रिया अदा करना चाहिये ?

ऐसे बाबा को हमें कितनी लगन और उमंग से याद करना चाहिए? हृदय में यही ध्वनि चलती रहे—वाह रे बाबा, वाह रे बाबा।

(२) वाह रे ड्रामा—

शिव बाबा द्वारा दिए गए, 'इस बिन्दु पर जब हम विचार मंथन करते हैं तो हम वास्तव में सर्व चिंताओं से, तनाव (tension) से एवं समस्त परेशानियों से मुक्त हो जाते हैं। हमें दृढ़ विश्वास हो जाता है कि एक बने बनाए ड्रामा अनुसार यह सृष्टि चक्र सदैव घूमता रहता है अर्थात् इस

सृष्टि में जो कुछ भी कर्म किए जाते हैं वह विश्व ड्रामा में पेश्तर से ही नूँद रहते हैं। हानि हो या लाभ, मान हो या अपमान, जीवन हो या मरण, किसी भी अनुकुल या प्रतिकूल परिस्थिति में हमें यही सोचना है कि यह तो होना ही था, इसमें कोई नई बात नहीं हुई (Nohting New)। जैसा कि गायन है कि :—

बनी बनाई बन रही, अब कुछ बननी नाहीं।
चिंता जाकी कीजिए, जो अनहोनी होय ।।

यदि कर्म योग के अनुसार हम पर कोई दुःख या व्याधि आती भी है तो हमें यही समझना है कि यह तो आने ही वाली थी, इससे मेरे विकर्म का खाता दग्ध हो रहा है और इसमें मेरा कल्याण ही समाया हुआ है।

इस ज्ञान बिन्दू पर सदैव मनन करने से और इसे अपने जीवन में धारण करने से हम सदा संतुष्ट रहते हैं, हमारी एकरस अवस्था बनी रहती है और हरेक घटना को हम साक्षी के बतौर देखते रहते हैं। इस तरह हम अपने इस जीवन में ही परम शान्ति का अनुभव करते हैं।

(३) वाह रे मैं और मेरा भाग्यशाली पार्ट—

जब हम ज्ञान में आने के पूर्व के जीवन को और बाद के जीवन का मिलान करते हैं तो हमें वास्तव में यह अनुभव होता है कि हम कितने भाग्यशाली हैं कि लाखों मनुष्यों में से हमें चुनकर बाबा ने हमें अपनी गोद का बच्चा बनाया और ज्ञानरत्नों से हमारा श्रृंगार करके हमारा जीवन ही पलट दिया। हमें स्वप्न में भी यह आशा नहीं थी कि हम शिव बाबा को यथार्थ रुप से जान सकेंगे, उनसे इसी जीवन में मिलन मना सकेंगे, उनसे बातचीत (रूह रूहान) कर सकेंगे और अतीन्द्रिय सुख का अनुभव कर सकेंगे। गीता के भगवान ने भी कहा है कि—

मनुष्याणां सहस्त्रेषु काश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां, कश्चिन्मां वेति तत्वत: ।।

सहस्त्रों मनुष्यों में से कोई ही मनुष्य सम्पूर्ण बनने का प्रयत्न करते हैं और उनमें से फिर कोई ही मुझे तत्वत: जान पाते हैं।

अपने इस पदमापदम भाग्यशाली होने की बात का जब हम मनन करते है तो हम शिवबाबा को हृदय से अनेकानेक धन्यवाद देते है, हमारी आँखों से प्रेमाश्रु बहने लगते हैं और हमारा शरीर कृतज्ञता से रोमांचित हो जाता है। हमें यह अनुभव होता है कि हमने जो पाना था सो पा लिया और अब कुछ भी पाना बाकी नहीं रहा।

इस तरह उपरोक्त तीनों महावाक्यों अर्थात् ज्ञान-त्रिवेणी में नित्य रमण करने से यह अनुभव है कि हम अपने समस्त विकर्मों को धोकर श्रेष्ठ पद की प्राप्ति कर सकेंगे।

पृष्ठ २१ का शेष

असन्तुष्टता

मैं क्यों करूँ ? यह हमारा चिंतन होना चाहिए क्योंकि हम विश्वकल्याणकारी और रहम दिल हैं।

(२) अप्रत्यक्ष रूप से हमें असंतुष्ट आत्मा प्रति शुभ भावना और कामना रखनी चाहिए। मुख और संकल्प में ऐसा कभी नहीं आना चाहिए कि वह तो ऐसा ही है, कितना भी करो सन्तुष्ट हो नहीं सकेगा, ऐसा कहना माना उस आत्मा को गिराना है। बल्कि उसकी महिमा ही गानी चाहिए। जब उसको महिमा मालूम पड़ेगी तथा विशेष रूप से यह महसूस होगा कि अमुक ने मेरी महिमा गायी है तो उसका मन और दृष्टि सहज ही रूहानी स्नेह में परिवर्तित हो जायेगी और इसमें कोई शक नहीं कि वह आत्मसमर्पण भी कर देगा।

तुम्हें पा के बाबा पा ली खुदाई

ब्र०कु० नन्द किशोर, मद्रास

तुम्हें पाके बाबा पाली खुदाई।
अब रोज मिलने की घड़ियाँ आईं॥
तुम्हें पाके बाबा···
ईश्वर समझकर जिन्हें रोज पूजा;
वह तो हम ही थे और न दूजा।
बाबा सुनाते,
तुम्हीं देवता थे।
अब आके फिर से लो देवताई॥
तुम्हें पाके बाबा···
नर से श्री नारायण बने थे;
पतितों से हम पावन बने थे।
सोलह कला के,
हम देवता थे।
पावन थी दुनिया सभी निर्विकारी॥
तुम्हें पाके बाबा ··
बाहर न भटको अपने को जानो;
सम्बन्ध छूटा है यह सत्य मानो।
देह नहीं हो,
तुम आत्मा हो।
आत्मा समझने में सब की भलाई॥
तुम्हें पाके बाबा···
ज्योति का बिन्दु हर आत्मा है;
ज्योति का बिन्दु परमात्मा है।
सब आत्मा का,
बाबा पिता है।
बिन्दु से बाबा की पहचान पाई॥
तुम्हें पाके बाबा···
स्वधर्म भूले थे घर को भुलाया;
बाबा मिले तब याद आया।
देहाभिमान में,
कैसे फँसे हम।
हमें भूली जीवनी याद आई॥
तुम्हें पाके बाबा···
निराकार ईश्वर संगम पर आया।
मानव के तन को ब्रह्मा बनाया।
ब्रह्मा के मुख से,
श्रीमत सुनाते।
बुराई न देखो यह युक्ति बताई॥
तुम्हें पाके बाबा···
ईश्वर का कहना देही बनो अब,
सृष्टि का चक्कर चलाते रहो अब।
पावन बनो औ,
पावन बनाओ।
करना कभी न किसी से लड़ाई॥
तुम्हें पाके बाबा···
मन व कर्म में पवित्रता छलके;
नैनो में हरदम बाबा ही झलके।
बच्चों से बाबा का,
मिलना है संगम।
संगम पर हम हैं बहिने ओ भाई॥
तुम्हें पाके बाबा···
कर्मों में साथी बाबा बनालो;
बुद्धि में प्यारा बाबा बिठालो।
यादों से तीखे,
बन्धन कटेंगे।
बाबा की यादों में होती कमाई॥
तुम्हें पाके बाबा···
बुद्धि से दुनिया का कर दो किनारा;
बाबा के हम हैं बाबा हमारा।
चलते रहेंगे,
अब न रुकेंगे।
चलना है वापस यह दुनिया पराई॥
तुम्हें पाके बाबा···
अंधेरी हैं राहें दीपक जलाओ;
भटकते हुओं को जाकर बुलाओ।
भाग्य बनालो,
समय जा रहा है।
देवों की दुनियाँ स्वागत को आई॥
तुम्हें पाके बाबा···
अमृत के वेले बाबा से खेलो;
खुशियाँ मनाओ वरदान ले लो।
दुर्बल नहीं हो,
शिव शक्तियाँ हो।
सम्पन्न बनने की यह है पढ़ाई॥
तुम्हें पाके बाबा··· ▭

"अमृत वेला"

ब्र० कु० सूरज कुमार मधुबन, आबू

"अमृत वेला शुद्ध पवन है, मेरे लाडलो जागो"—ये भगवान के प्यार भरे बोल जब आत्माओं को गहरी निद्रा से जगाते हैं तो मन उस परम प्रियतम के स्नेह में लीन होने लगता है और आत्माओं के मन से आवाज़ निकलती है—"वसुधा के इस आँचल में, शिव स्वागत आज तुम्हारा" आओ प्यारे परमपिता, हम इस धरा पर आपका स्वागत करते हैं। ओह···कितना अनोखा है ये जीवन, जहाँ आँख खुलते ही उस परमपिता की छवि दिखाई देती है और जीवन के वे अनमोल क्षण आत्मा को अकथनीय अनुभूति देकर विलीन होते जाते हैं।

पुरुषोत्तम संगम युग का आगमन···फिर उसमें भगवान का अवतरण और आत्माओं का उनसे मिलन, कितना निराला व अद्भुत है। इस युग में भी अमृत वेले का समय इस मिलन को कितना सुखदाई व आनन्द युक्त बना देता है। इस सत्य के अनुभवी इस मुहूर्त के महत्व को अच्छी तरह जानते हैं। अमृत द्वारा अमर बनाने वाला ये संगम युग का अमृत वेला अपने में अनेक अमूल्य खज़ाने छुपाये हुए है जिनकी चाबी हमारे पास है।

मनुष्य भी इस काल को बुद्धिवर्धक और ईश-भजन लायक मानते हैं और भगवान के सुपुत्रों के लिए यह मन को फुर्तीला करने वाला व तन की कर्मेन्द्रियों को शीतल करने वाला है। चित्त में शीतलता के बीज अंकुरित कर, विभिन्न अग्नियों को शान्त करने वाला ये ब्रह्म मुहूर्त मुक्त कण्ठ से प्रशंसा करने योग्य है। इसी काल में मन दिव्य प्रेरणाओं से युक्त होकर अपने लक्ष्य की ओर तीव्रगामी होता है।

वैसे तो सृष्टि चक्र के अनुरूप ज्ञान-सूर्य के उदय होने का काल, घोर अन्धकारमय रात्रि का ढलना, प्रभात का काल यह पुरुषोत्तम संगम युग स्वयं ही विशाल अमृत वेला है, जबकि ज्ञान-सूर्य परमात्मा रात्री का भयानक अन्धकार समाप्त करके दिवस का प्रारम्भ करते हैं। जब ज्ञान सूर्य की रोशनी से कलियुग के मायावी कीटाणु नष्ट हो जाते हैं। रात पूरी हो जाती है। इस काल की महिमा का उल्लेख तो किसी की भी लेखनी से परे है।

भगवान को 'अपना' कह देने के बाद, उन ब्राह्मण सन्तानों के लिए अमृत वेले का महत्व भी उतना ही अधिक है। वे आत्माएँ जो भगवान से सम्बन्ध कायम कर लेने के बाद ईश्वरीय अनुभूतियों से और ईश्वरीय खज़ानों से इस जीवन को तृप्त करना चाहती हैं, इस अनुपम काल के महत्व पर ध्यान दें।

केवल जागना ही प्रर्याप्त नहीं

इसमें कोई सन्देह नहीं कि कई योग-प्रेमी सवेरे के इस अमूल्य समय में जाग जाते हैं। शिव बाबा के महावाक्यों के अनुसार प्रातः दो बजे से पाँच बजे तक का समय ब्रह्म-मुहूर्त कहा जाता है। कोई पुरुषार्थी दो बजे, कोई तीन बजे तथा कोई चार बजे जागते हैं। परन्तु केवल जागना ही पर्याप्त नहीं है। समय का यथार्थ उपयोग करना, इसे पूर्ण महत्व के साथ बिताना आवश्यक है। ईश्वरीय महावाक्य हैं कि अमृत वेले को यथार्थ महत्व न देना—सबसे बड़ी कमजोरी है। तो प्रस्तुत चर्चा में हम इस काल को शक्तिशाली बनाने के अनुभव युक्त तथ्यों पर प्रकाश डालेंगे।

"अमृत वेले का सदुपयोग"

इससे पूर्व कि हम अमृत वेले के सही उपयोग की चर्चा करें। हम सब इस बात के अनुभवी हैं कि उठते ही मन में पिछले दिन के प्रभाव से संकल्पों का ताँता सा लग जाता है जो हमें अमृत वेले के आनन्द से दूर

ले जाता है। अतः रात्रि को सोने से पूर्व अपने पुरुषार्थ पर थोड़ा-सा ध्यान दें। बातचीत करते हुए, रेडियो सुनते हुए या अखबार पढ़ते हुए ही सो जाने से अमृत वेला श्रेष्ठ नहीं गुजरेगा। अतः सोने से पूर्व स्वयं को पूर्णतया खुशी और नशे की शक्तिशाली योग-युक्त स्थिति में स्थित करें। इसके लिए केवल इतना ही आवश्यक नहीं कि सोने से पूर्व ३ मिनट योग में बैठकर सो जाएं—यह तो केवल औपचारिकता मात्र है। सोने से पूर्व आधा घण्टा या कम से कम पन्द्रह मिनट अच्छी स्थिति का अभ्यास आवश्यक है और उसी समय हम वह नशे की बात भी मन में निश्चित कर लें जिसमें हमें उठते ही स्थित होना है। तब हमारे अमृत वेले का प्रारम्भ शक्तिशाली होगा।

आँख खुलते ही पहला संकल्प

जैसे ही आँख खुले, हम यह महसूस करें, कि मैं आत्मा इस तन में उतर आई हूँ। जैसे कि जब अव्यक्त बाबा संदेशी के तन में आते हैं तो आँख खुलते ही सब अनुभव कर लेते हैं कि बाबा आ गये और सभी में एक नई सी चेतना आ जाती है। ऐसा अभ्यास करने से हमें देह से न्यारापन अनुभव होगा जो कि हमारी श्रेष्ठ स्थिति का दृढ़ आधार बन जाएगा ओर साथ-ही-साथ उस ईश्वरीय नशे में भी स्थित हो जाएं जो कि हमने रात्रि को निश्चित किया था। जैसे कि—"मैं आत्मा अब किसकी हूँ ?" "आह···अब मेरा कौन बना है ?" "ओह मुझे किसने आन जगाया ?" "मेरी तकदीर का ताला किसने खोला ?" कितना भाग्यशाली हूँ मैं—इस प्रकार शिव बाबा से गुड मॉर्निंग करें।

ऐसे अभ्यास से मन से व्यर्थ संकल्पों का आवरण पूर्णतया समाप्त हो जाएगा और अमृत वेले की सर्वाधिक आनन्द प्रदायक अपने प्रियतम से मिलने पर रूह-रिहान प्रारम्भ हो जाएगी और मन इतना आनन्द विभोर हो उठेगा कि इतना आनन्द उसे तीनों लोकों व चारों युगों में भी प्राप्त नहीं होगा।

इसके बाद शरीर शुद्धि के समय इस देह को चेतन देह रूप आत्मा का मन्दिर समझ कर करें। जैसे ब्रुश करते हुए—"मैं आत्मा इस मन्दिर के दरवाजों की सफाई कर रही हूँ।" स्नान करते समय—मैं आत्मा मन्दिर की धुलाई कर रही हूँ···आदि-आदि···। जैसे ब्रह्मा बाबा अभ्यास किया करते थे, कि मैं तो बच्चा हूँ—शिव बाबा मुझे स्नान करा रहे हैं। मेरे सिर पर पानी की लोटी डाल रहे हैं। कितनी आनन्दित करने वाली हैं ये मधुर रूह-रिहान···।

ब्रह्म लोक में स्थित

अमृत वेला को ब्रह्म-मुहूर्त भी कहा जाता है। क्योंकि आत्मा इस काल में सहज ही अपने घर ब्रह्मलोक में स्थित हो सकती है और इस शान्तिधाम की सुखदाई मधुर शान्ति का अनुभव कर सकती है। इसका कारण यही है कि उस समय प्रकृति भी शांत है, मनुष्य भी शांत है तो योगियों का मन भी शान्त हो जाता है। अतः इस मुहूर्त में अधिक से अधिक ब्रह्म लोक में स्थित ज्योति स्वरूप परमपिता के समीप जाकर बैठ जाएँ अर्थात् योग की सबसे शक्तिशाली स्थिति बिन्दु रूप का अभ्यास करें। इस स्थिति में स्थित होकर—

—○ शुभ भावनाओं के वाइब्रेशन्स (Vibrations) फैलाएँ।
—○ शान्ति व पवित्रता के प्रकम्पन (Vibrations) फैलाएँ।
—○ रूहों से रूह-रिहान करें।
—○ आत्माओं को ईश्वरीय सन्देश दें और आत्माओं का आह्वान करें।
—○ कमजोर आत्माओं को ईश्वरीय बल दें।
—○ अन्तःवाहक शरीर द्वारा अर्थात् संकल्प शक्ति द्वारा सेवा करें।

अमृत वेला में स्वयं को अमृत से भरपूर करें

इसका नाम अमृत वेला तब ही सार्थक होगा जब कि हम स्वयं को इस समय अमृत से भरपूर करें। क्योंकि यह समय सारे दिन की नींव समान है। इस की कमजोरी सारे दिन की कमजोरी सिद्ध होगी। अतः स्वचिन्तन से या स्वदर्शन चक्र के अभ्यास से हम स्वयं को भरपूर करें। इसका बहुत अधिक बल हमें

जीवन में प्राप्त होगा।

ब्रह्मा बाबा विशेष रूप से पाँच से छः बजे के बीच ज्ञान-मंथन करते थे। वे कहा करते थे कि मैं बच्चों के लिए ताजा भोजन बना रहा हूँ। इससे आत्मा को ज्ञान की आथर्टी महसूस होती है और जीवन खाली-खाली नहीं लगता। भगवान के महान बनाने वाले महावाक्य भी इसी समय हमारे मन को रस देते हैं। भगवान स्वयं परम शिक्षक बनकर पढ़ाने आते हैं और अगर हम पढ़ने भी न जाएँ, तो क्या लोग हमारी तकदीर पर हँसेंगे नहीं।

अतः हमें निश्चय कर लेना चाहिए कि सवेरे उठने से सात से आठ बजे तक के तीन-चार घण्टे हमारी आध्यात्मिक उन्नति के हैं। इसमें हम कार्य व्यवहार के विचारों को स्थान न दें। इस प्रकार अगर हमारे प्रातः के ये तीन-चार घण्टे पूर्ण सफल होंगे। तो हमें अपने इस ईश्वरीय जीवन में अनेक दिव्य अनुभव होंगे।

भगवान के महावाक्य

इस परम कल्याणकारी मुहूर्त के महत्व का वर्णन शिव बाबा ने अनेक बार किया है। भगवान ने इस काल को मन इच्छित फल देने वाला कहा। तो हम इसके सम्पूर्ण महत्व को ध्यान में रखते हुए, भाग्य से प्राप्त इस वेला का सम्पूर्ण लाभ उठायें।

❀ ये वो समय है जबकि भगवान अपने बच्चों के लिए सर्व खज़ाने खोल देता है। जिसको जितनी शक्तियाँ चाहिएं, जितने वरदान चाहिएं, जितने गुण व रत्न चाहिएं, ले सकते हैं। केवल परमपिता के पास जाकर बैठ जाओ, फिर सब कुछ तुम्हारा। किसी भी समस्या का हल बाप उसी समय देते हैं। परन्तु अगर हम सोये होंगे या अलबेले होंगे तो हल कैसे लेंगे।

❀ शिव बाबा ने कहा है कि बाप के जिस सम्बन्ध का चाहो, इस समय अनुभव कर सकते हो। इस समय खुदा दोस्त के रूप में होता है इस समय शिव बाबा 'भोला' होता है, जो सहज ही सब कुछ दे देता है। इस समय बाप खुद बच्चों के पास मिलने आते हैं।

❀ इस समय तुम 'विजयी-रत्न भव' का वरदान बाप से प्राप्त कर सकते हो। भोले नाथ को रिझा सकते हो, अपनी तकदीर की रेखा जैसी भी चाहो, खिंचवा सकते हो।

अमृत वेला सफल न करने से हानियाँ

चारों युग हम मन भर कर सोयेंगे। ये संगम युग का ही अमृत वेला है, जहाँ हमें अति सुख, परम शांति और अनेक ईश्वरीय प्राप्तियाँ होती है। तो अगर इस श्रेष्ठ काल में भी हम सोते ही रहे तो निश्चय ही हम अनेक प्राप्तियों से वंचित रह जाएंगे और अगर हम उठकर केवल नेमी नाथ बनकर आधा घण्टा मन को मार कर योग में बैठे तो वह सन्तोषदायक नहीं होगा। तो अमृत वेले को सम्पूर्ण सफल न करने से निम्न-लिखित हानियाँ सम्भव हैं।

❀ इसी समय मन में खुशियों का खज़ाना भरता है। अगर इस समय खुशी जमा न की तो सारा दिन खुशी का अभाव महसूस होगा और मन सन्तुष्ट नहीं होगा और पुरुषार्थी के जीवन में शिकायत बनी रहेगी कि भगवान को पाकर भी सतत् खुशी व सन्तुष्टता क्यों नहीं है।

❀ ये समय आत्मा में शक्तियाँ भरने का है। इसे गँवाने से आत्मा कमजोर होती जाएगी और सारा दिन स्वयं को विघ्नों से घिरा हुआ महसूस करेंगे। अतः जीवन को विघ्न-मुक्त बनाने के लिए अमृत वेले पर ध्यान दें।

❀ अमृत वेले सहज योग का अनुभव न करने से सारे दिन पुरुषार्थ में बहुत मेहनत लगेगी और मेहनत के बाद भी कम प्राप्ति का अनुभव होगा। अतः जीवन की यात्रा को सरल करने के लिए इस काल को सरल बनायें।

❀ अमृत वेला खोने से ऐसा महसूस होगा कि ईश्वरीय सुख व ईश्वरीय प्रेम कहीं दूर-दूर की वस्तुएँ हैं।

❀ लक्ष्य मृग तृष्णा समान महसूस होगा।

❀ रोज-रोज मन में हार होने से जीवन में निराशा के बादल छाए रहेंगे और सवेरे बाप के साथ का अनुभव न करने से मन में उदासी भरी रहेगी और यह पथ काँटों का पथ नजर आने लगेगा।

❀ "हम कुछ कर सकेंगे"—ऐसा आत्म-विश्वास समाप्त होता जाएगा।

❀ शिव बाबा से मुँह छिपाते रहेंगे। सदा ऐसी हीन भावना रहेगी जैसे कि हमने कोई बड़ी भूल कर दी है।

❀ स्वमान की सीट पर स्थिर नहीं रह सकेंगे। दूसरों को भी महानता का अनुभव नहीं होगा।

❀ प्रातःकालीन स्वच्छ, सुखद व समस्या निवारक प्रेरणाएँ भी प्राप्त नहीं कर सकेंगे।

प्रेरणादायक महावाक्य

- **अमृत वेले बाप विशेष शक्तियाँ व वरदान देते हैं, जो सारे दिन में नहीं मिलता।**
- **अमृत वेले सोना महापाप है।**
- **अमृत वेले सोना माना सब कुछ खोना।**
- **अमृत वेले सोना मना बाप की अवज्ञा करना।**
- **अमृत वेले सोना भाग्यहीनता की निशानी है।**
- **4.00 बजे के बाद चारपाई काँटों की शैय्या है।**
- **जो अमृत वेले को सफल नहीं करते, वे कुछ भी नहीं कर सकते।**

ध्यान दें

० उठकर बिस्तर पर ही योग में न बैठें। चाहे घूम फिर कर योग करें या अन्य स्थान पर।

० यदि योग में नींद आये तो विचार मनन करें।

० अगर मन पर बोझ हो तो बाबा से रूह-रिहान करके बोझ उतार दें।

० अगर बीमार हो तो थोड़ा समय भी योग अवश्य करें। इससे खुशी बढ़ेगी व बीमारी का भार हल्का हो जाएगा।

० सेवा में अधिक व्यस्त होने पर भी इसके महत्व को न भूलें। यह याद रक्खें कि यही सेवा में सबसे अधिक सहयोगी है।

० अगर आप अकेले ही ज्ञान में चलते हैं तो घर में ही इस समय अधिक योग करें। इसका प्रभाव परिवार वालों पर होगा।

इस प्रकार संगम युग को पूर्ण सफल करने के लिए, आये हुए भगवान से सर्व प्राप्ति करने के लिए, आदर्श, सरल, पवित्र व सुख-शान्ति सम्पन्न जीवन जीने के लिए इस विशेष काल को वरदानी काल समझ कर पूर्ण महत्व देना चाहिए। तब हमारी गाड़ी कभी भी पटरी से नहीं उतरेगी और हम समस्त विश्व में स्वयं को सर्वश्रेष्ठ भाग्यशाली अनुभव करेंगे। □

परमात्मा का अवतरण

उलझनों को सुलझाने हेतु

वर्तमान समय संसार में परमात्मा के स्वरूप के विषय में अनेक विचार, अनेक शास्त्र, अनेक ग्रंथ और अनेक वाद हैं। कोई तो कहता है कि परमात्मा है ही नहीं, केवल आत्माएँ ही हैं। अन्य कोई कहता है कि आत्माएँ भी परमात्मा के अंश हैं। तीसरा कहता है कि परमात्मा सभी आत्माओं में व्यापक है। इस प्रकार अनेक पोथों, भाष्यों, टीकाओं, व्याख्याओं, मतों आदि द्वारा ज्ञान रूपी सूत और ही अधिक उलझ गया है और मनुष्य उसमें जकड़ा हुआ परेशान है। मनुष्य नहीं जानता कि इस गुत्थी को कैसे सुलझाया जाय। जब ऐसी स्थिति हो जाती है तब ज्योतिस्वरूप, अकाय परमपिता परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के तन में दिव्य प्रवेश करके और वास्तविक ज्ञान की शिक्षा देकर मनुष्य को इस उलझन से निकालते हैं। वर्तमान समय ऐसा ही समय चल रहा है। अब परमपिता परमात्मा ज्ञान का सार समझा कर मनुष्य को उलझनों से छुड़ा रहे हैं।

काठमाण्डों में त्रिभुवन यूनिवर्सिटी में संस्कृत के प्रोफेसर तथा विश्व हिन्दू सम्मेलन के सदस्य डा० नेमराज केशव शरण जी को शीला बहन राखी बाँधते हुए।

कॉलिज स्क्वायर (कटक) सेवा केन्द्र की ओर से रोटरी क्लब में ब्र० कु० कुलदीपजी रोटेरियन्स को राखी बाँध रही हैं। भ्राता जी० सी० सेनापति, आई० जी० विजिलेन्स चेयरमैन रोटरी क्लब राखी बंधवाने के पश्चात् खड़े हैं।

मिर्जापुर जिला कारागार में कैदियों को राखी बाँधने के पश्चात् भ्राता सी० एल० सिंह जेलर साहब को पवित्रता की सूचक राखी ब्र० कु० कमल बाँध रही हैं।

जालन्धर से प्रकाशित हिन्द समाचार समूह के मुख्य सम्पादक भ्राता रमेश जी को ब्र० कु० राज राखी बाँधते हुए।

सन्डूर पैलेस में महाराजा, महारानी को ब्र० कु० शारदा राखी बाँध रही हैं, साथ में ब्र० कु० कमला तिलक दे रही हैं।

कलकत्ता (राय बगान) में राखी के पावन पर्व पर ब्र० कु० गीता आल इंडिया रेडियो के पूर्वी क्षेत्र के डिप्टी जनरल डायरेक्टर भ्राता एस० काण्डा स्वामी को राखी बाँधते हुए।

जबलपुर विश्वविद्यालय के उपकुलपति भ्राता कांति चौधरी को ब्र० कु० सुमन राखी बाँधते हुए।

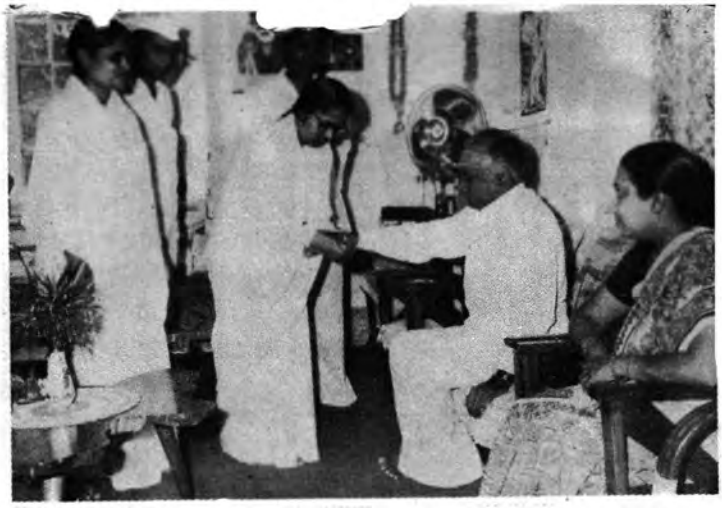

बिजापुर में ब्र० कु० सुनिता जी भ्राता डी० पी० हीरेमत जिला सेशन जज व श्रीमती हीरेमत को राखी बाँध रही हैं।

जबलपुर में म० प्र० उच्च न्यायालय के न्यायमूर्ति भ्राता फैजुनुद्दीन को ब्र० कु० सुमन राखी बाँधते हुए।

रोपड़ में ब्र० कु० राजकुमारी भ्राता रनदेव, सैशन जज को पवित्रता की सूचक राखी बाँधने के पश्चात् आत्म स्मृति का तिलक लगा रही हैं।

धर्मशाला में भ्राता देव स्वरूप जी, जिलाधीश को ब्र० कु० उमा जी पवित्रता की सूचक राखी बाँध रही हैं।

रायपुर के चीफ इंजीनियर (सिंचाई विभाग) भ्राता एल० ए० पंजवानी को पावन राखी बाँधते हुए ब्र० कु० विमला।

कटक में ब्र० कु० सुशीला भ्राता एच० ए० पटनायक कलक्टर को पावन राखी बाँध रही हैं, पास में ब्र० कु० मंजू हैं।

दार्जिलिंग में प्लीडर तथा सोशल वर्कर ए० सी० चटर्जी को; 83 में होने वाली कांफ्रेन्स का फोल्डर देते हुए तथा रक्षा बंधन का संदेश देते हुए ब्र०कु० स्वदर्शन जी तथा ब्र०कु० केसर।

बटाला में एस० डी० एम० भ्राता एच० एस० पावर, आश्रम पर राखी बंधवाने के पश्चात् अपने विचार लिखते हुए।

पुरी में रक्षा बन्धन के अवसर पर ब्र० कु० निरूपमा जी भ्राता एन० के० महापात्र (डी० एम और कलक्टर पुरी) को राखी बाँध रही हैं। पास में श्रीमती महापात्र, रविन्द्र जी बैठे हैं।

नैनीताल में अतिरिक्त कमिश्नर भ्राता प्रदीप विष्णु को ब्र० कु० शीला बहन आत्म स्मृति का तिलक लगाते हुए।

जालन्धर डिवीजन के कमिश्नर, भ्राता एस० सी० सेन को ब्र० कु० राज राखी बाँध रही हैं।

रायपुर के कमिश्नर भ्राता रघुनाथ प्रसाद जी को ब्र० कु० विमला पावन राखी बाँधते हुए।

विजयवाड़ा में डा० भाई कुमार जी ब्र० कु० लीला बहन से पावन राखी बंधवा रहे हैं।

दिल्ली (पहाड़ गंज) सेवा केन्द्र की ब्र० कु० शील ब्र०कु० लुईसा तथा भ्राता प्रेम प्रकाश एवं ओमप्रकाश, दिल्ली के बिशप भ्राता एम० कैलेब को राखी बाँधने के पश्चात् खड़े हैं।

गिदड़बाह मण्डी में ऐग्जेक्यूटिव मैजिस्ट्रेट को ब्र० कु० शीला जी ईश्वरीय सौगात भेंट कर रही हैं।

दिल्ली सिक्ख गुरुद्वारा मैनेजिंग कमेटी के प्रधान सरदार सुलखनसिंह जी को राखी बाँधने के पश्चात् चित्र में भ्राता प्रेम-प्रकाश तथा शील बहन साथ दिखाई दे रहे हैं।

ब्र० कु० सरला मेहसाना के डिस्ट्रिक्ट जज को पावन राखी बाँधते हुए।

समाना मण्डी सेवा केन्द्र की ओर से वहाँ के एस० डी० एम० को राखी बाँधने के पश्चात् ब्र० कु० कृष्णा बहन राखी का महत्त्व समझा रही हैं।

फरीदाबाद में डिप्टी कमिश्नर भ्राता चैटर्जी और उनकी धर्म-पत्नी को राखी बांधने के पश्चात् ऊषा जी साहित्य भेंट कर रही हैं

"कहानी-एक राही की"

ब्र० कु० राजेन्द्र ललावत, उज्जैन

वह एक अन्धियारा पथ (कलियुग) था जिस पर कि चारों ओर गहरा अन्धकार (विकारों का) फैला हुआ था। इतना अन्धकार कि अन्धकार के अलावा और कुछ भी दिखाई नहीं देता था और उस अन्धियारे पथ पर वह राही बेखबर भटकता हुआ चला जा रहा था। उस राही को कुछ भी पता नहीं था कि वह कौन है, कहाँ से आया है, और कहाँ जा रहा है? इन सब बातों से अनभिज्ञ बस केवल वह गहन अन्धकार में बढ़ा चला जा रहा था और प्रयास कर रहा था उस अन्धियारे पथ पर प्रकाश (परमात्मा) को ढूंढ़ने की। लेकिन राही को उस पथ पर कहीं भी प्रकाश नज़र नहीं आ रहा था। उस अन्धियारे पथ पर सिवाय अन्धकार के कुछ था ही नहीं, जो उस राही को नज़र आता।

उस अन्धियारे पथ (कलियुग) पर चलते हुए उस राही को काफी समय (लगभग २५०० वर्ष) व्यतीत हो गया था और राही थका हुआ, निराशा के सागर में डूबा हुआ चला जा रहा था। उस पथ पर वह राही आजाद नहीं था, क्योंकि उस अन्धियारे पथ पर कुछ लुटेरों (देह अभिमान, काम, क्रोधादि) का आतंक फैला हुआ था और उन्होंने उस राही को अपने चंगुल में फंसा रखा था। वह राही चीखता-चिल्लाता उनसे छूटने की कोशिश कर रहा था। लेकिन कोई फायदा नहीं क्योंकि राही उस अन्धियारे पथ पर उन लुटेरों के जाल में फँसा हुआ अपना आत्म-बल खो चुका था और उसमें इतनी शक्ति और चेतना नहीं रह गयी थी कि वह उन लुटेरों (विकारों) को भगा पाता। उनसे बचने के लिये और उस पथ से छुटकारा पाने के लिये राही प्रकाश (परमात्मा) को तलाश कर रहा था।

अचानक उस अन्धियारे पथ पर उस राही को कुछ आशा की किरण नज़र आई। कहीं दूर अन्धकार में उसे कुछ प्रकाशपुँज (साधू-संन्यासी) नज़र आ रहे थे। राही थका, निराशा में डूबा हुआ उन लुटेरों का सामना करता हुआ उन प्रकाशपुँजों की ओर बढ़ने लगा। इस आशा में कि कोई तो उसे इस अन्धियारे पथ और लुटेरों (विकारों) से मुक्ति दिला देगा। लेकिन उन प्रकाशपुंजों के पास पहुँचकर राही को निराशा ही हाथ लगी। क्योंकि वे स्वयं उन लुटेरों के अधीन थे और उनका प्रकाश कृत्रिम था, वे केवल दिखावा मात्र थे। वे कृत्रिम प्रकाश पुंज (साधू-संन्यासी) राही को उस अन्धियारे पथ पर उन लुटेरों से नहीं बचा पाये।

राही निराशा में डूबा हुआ फिर उस अन्धियारे पथ पर बढ़ता चला गया। शनैः शनैः उस पथ पर अन्धकार बढ़ता ही चला जा रहा था और साथ ही साथ उन लुटेरों का प्रकोप भी। राही ने अपने चारों ओर नज़र दौड़ाई तो उसे लगा कि वह उस पथ पर भटक रहे थे, जिन्हें यह पता नहीं था कि वे कौन हैं, कहाँ जा रहे हैं? समय अपनी गति से चलता रहा और राही उस अन्धियारे पथ पर धीरे-धीरे पग बढ़ाता चला जा रहा था। वह उस अन्धियारे पथ पर लुटेरों (विकारों) के कारण बहुत ही दुखी-अशान्त हो चुका था और बार-बार प्रकाश (परमात्मा) को पुकार रहा था, प्रकाश को खोज रहा था।

अचानक ही वह राही खुशी से झूम उठा, क्योंकि वह भटकता हुआ एक ऐसे स्थान पर पहुँच गया था, जहाँ पर कि बहुत गहरा प्रकाश प्रकट हो रहा था। उस प्रकाश पुँज को देखकर आशा की दूसरी किरण राही के अन्दर जागी। राही आशा-निराशा के बीच झूलता हुआ उस प्रकाश पुंज की ओर बढ़ने लगा। राही ने देखा कि अनेक राही उस प्रकाश पुँज के आस-

पास पहले से ही मौजूद हैं और अनेक राही दौड़ते हुए चले आ रहे हैं। उस विराट प्रकाश को देखकर लुटेरे (विकार) भी पीछे हटने लगे थे। ऐसा लग रहा था कि यही उस राही की मंज़िल थी। और राही धीरे-धीरे उस गहरे प्रकाश में पहुँच ही गया। उस प्रकाश में पहुँचते ही उसे गहरी शान्ति और सुख का अनुभव हुआ। उस प्रकाश पुंज ने राही को सारा ही प्रकाशमय (ज्ञानयुक्त) कर दिया था। वहाँ पहुँचकर ही उसे पता चला कि वह आत्मा है, उसकी मंजिल उसका घर (परमधाम) है। वहाँ से निकलती प्रकाश किरणें स्वयं ज्ञानसूर्य परमात्मा के प्रकाश (ज्ञान) की किरणें थीं। वहाँ पहुँचकर राही का आत्मबल शनैः शनैः लौटने लगा था और वे लुटेरे (विकार) धीरे-धीरे राही को छोड़ते जा रहे थे। क्योंकि ऐसा लग रहा था कि वे प्रकाश (ज्ञान) की किरणें उन्हें छेदती जा रही हैं। और राही सुख एवं शान्ति का अनुभव कर रहा था। उस प्रकाश (परमात्मा) ने उस राही को ही नहीं, अपितु उस अन्धियारे पथ पर भटकते हुए अनेक राहियों को उनका स्वरूप याद दिलाया कि वे आत्माएं हैं और अपने पिता से बिछुड़ कर इस अन्धियारे पथ (कलियुग) में भटक रही थीं। उसी ने राही को मंजिल बताई कि अब वापस घर (परमधाम) होते हुए स्वर्ग में जाना है।

राही अपार खुशी में था, उसका रोम-रोम पुलकित था कि आखिर उस अन्धियारे पथ (कलयुग) पर भटकते हुए उसे प्रकाश (ज्ञान सूर्य परमात्मा) मिल ही गया और उस ज्ञानसूर्य ने ही उस राही को उस अन्धियारे पथ और उन लुटेरों (विकारों) से मुक्ति दिला दी। राही लाख-लाख बार उस प्रकाश (परमात्मा) का शुक्रिया अदा करते हुए उसके मिलन का आनन्द ले रहा था और उस अन्धियारे पथ (कलियुग) को छोड़कर ज्ञान और दिव्य गुणों से आलोकित प्रकाशमय पथ पर बढ़ते हुए स्वर्ग (सतयुग) में जाने का तीव्र पुरूषार्थ कर रहा था।

—सत्य पर आधारित

□

"धन जब माया बन जाता है"

ब्र० कु० राज किरण, मुजफ्फरनगर

धन जब माया बन जाता है,
मन का रूप बिगड़ जाता है
तब होती हैं काली रात
जग अन्धियारा छा जाता है
धन जब.....

मन में आग जले विषयों की
मन तब निर्बल हो जाता है
लक्ष्य भूल जाता जीवन का
बे-लगाम अश्व बन जाता है
धन जब.....

भाई-भाई का शत्रु बनता
पुत्र पिता को खा जाता है
बुद्धि पर पर्दा पड़ता है
सच्चा सुख तब छिन जाता है
धन जब.....

व्यसनों में इन्सान डूबता
कर्मों में हैवान घूमता
खो जाता है जीवन सारा
जग का रूप बदल जाता है
धन जब.....

पापों को पुण्य समझता है नर,
पापी का मान बढ़ जाता है
मर्यादा सब खो जाती है
मानव दानव बन जाता है
धन जब.....

□

आध्यात्मिक सेवा समाचार

रक्षाबन्धन के अवसर पर की गई ईश्वरीय सेवाएं

(ब्र० कु० सत्यनारायण, ब्र० कु० श्रीराम कृष्णनगर, देहली द्वारा संकलित)

4 अगस्त 1982 बुधवार को रक्षा बन्धन का पावन पर्व सभी केन्द्रों पर बड़े धूमधाम से मनाया गया। सभी जगह ब्राह्मण कुल भूषणों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधकर इसे अविनाशी बनाए रखने की तथा अन्य कमियों को निकाल कर उनके स्थान पर कोई न कोई अच्छाई ग्रहण करने की प्रतिज्ञा भी कराई गई। विभिन्न सेवा केन्द्रों का सेवा समाचार इस प्रकार है—

गांधी नगर (गुजरात) में राज्यपाल शारदा बहिन, मुख्य मंत्री भ्राता माधवसिंह सोलंकी, भूतपूर्व मुख्य मंत्री बाबू भाई जसभाई पटेल, मंत्रिमंडल के 17 सदस्यों, 23 सरकारी सचिवों व अधिकारियों, 11 अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को, एस० टी० डिपो के 50 ड्राइवर-कंडक्टरों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई तथा 1983 में होने वाले विश्व शान्ति सम्मेलन के लिए निमंत्रण दिया गया।

सतना में 32 विशिष्ट व्यक्तियों को, रीवा में 7, मैहर में 12 अमर पाटन में 7, अतरी में 13, कर्वी में 9 विशिष्ट व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बांधी गई, जिनमें सभी वर्गों के लोग-शामिल हैं। "दैनिक जागरण" तथा "जवान भारत" समाचार पत्रों में भी रक्षा बन्धन से सम्बन्धित लेख प्रकाशित हुए।

चण्डीगढ़ : हरियाणा के गवर्नर भ्राता जी० डी० तपासे, अन्य मंत्रिगण, सचिवों, न्यायाधीशों सहित 22 प्रमुख व्यक्तियों को राखी बांधी गई। ब्लाइंड सँस्थान में तथा जिला जेल के लगभग 100 कैदियों को भी राखी बांधी गई। रक्षा बन्धन से सम्बन्धित एक लेख भी हिन्दी ट्रिब्यून में प्रकाशित किया गया।

जगाधरी राखी के पावन पर्व पर नौ प्रमुख व्यक्तियों को राखी का महत्त्व बताकर राखी बांधी गई जिसमें चीफ़ मेडिकल आफिसर, डी० एस० पी०, जुडिशियल मैजिस्ट्रेट तथा अन्य डाक्टर और वकील तथा व्यापारी वर्ग के लोग शामिल हैं।

बीजापुर रक्षा बन्धन के उपलक्ष्य में पवित्रता सप्ताह मनाया गया। तथा डिप्टी कमिश्नर, जिला एवं सैशन जज, सिविल जज, मुंसिफ मैजिस्ट्रेट आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधी गई।

नैनीताल कमायूं मंडल के कमिश्नर, नैनीताल के डिप्टी कलक्टर तथा शहर के अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पवित्र राखी बांधी गई तथा साहित्य भेंट किया गया।

नासिक रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को आमन्त्रित करके पवित्रता की सूचक राखी बांधी गई। रक्षा बन्धन के दिन नासिक रोड सैंट्रल जेल के 40 कैदियों और 30 जेल अधिकारियों को भी राखी बांधी गई। शिर्डी शहर में प्रोजैक्टर शो, प्रदर्शनी और प्रवचनों द्वारा हजारों आत्माओं को शिव बाबा का परिचय मिला।

अंजार में बस डिपो पर ड्राइवर, कंडक्टर, मैकेनिक, कलीनर आदि 450 व्यक्तियों को राखी बाँधकर बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा कराई। इसका समाचार दैनिक समाचार पत्र 'कच्छ मित्र' में छपा। भुज रेडियो स्टेशन से भी प्रसारित किया गया। गांधी धाम सेवा केन्द्र पर भी रक्षा बन्धन के दिन 70 विशिष्ट व्यक्तियों को राखी भेजी गई।

काठमांडू सेवा केन्द्र से शीला बहिन लिखती हैं कि नारायण गढ़ में व्यक्तियों को विशेष राखी भेजी गई, यूनिवर्सल सनातन धर्म फांउडेशन की मीटिंग के अवसर पर आए हुए कुछ भाइयों को राखी बांधी गई। काठमंडू में 300 विशिष्ट व्यक्तियों को राखी बांधी गई, जिनमें 14 मन्त्री भी शामिल हैं।

कानपुर (किदवई नगर) रक्षा बन्धन का महत्त्व घर-घर जाकर स्पष्ट किया गया तथा शाम को सार्वजनिक रक्षा बन्धन समारोह आयोजित किया गया जिसमें बंगाली, मद्रासी, पंजाबी तथा यू० पी० के व्यक्तियों द्वारा एक-दो की रक्षा करते रहने का आजीवन व्रत लिवाया गया।

पूना सेवा केन्द्र से सम्बन्धित नगर गांव गीता पाठशाला से समाचार मिला है नगर जेल में 80 कैदियों और 5 महिला जेलरों को राखी बाँधी गई। एस० टी० बस डिपार्ट मैंट में भी करीब 100 भाई-बहिनों को राखी बाँधी गई।

पहाड़गंज : (दिल्ली) रक्षा बन्धन के दिन राजधानी के प्रमुख धार्मिक नेताओं को राखी बांधी गई जिसमें आर्च विशप एंजल फर्नाडीस, निजामुद्दीन दरगाह के पीर जामिन निजामी, चर्च आफ नार्थ इण्डिया के बिशप एम-कैलेब आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त आकाश वाणी के स्टेशन डायरेक्टर, दूरदर्शन के डायरेक्टर जनरल, पहाड़ गंज के एस० एच० ओ० तथा असिटैंट कमिश्नर आफ पुलिस आदि को राखी बांधी गई।

सिद्धपुर : रक्षा बन्धन के दिन यहां जेल में कदियों को राखी बांधी गई, सभी ने शराब, चोरी, बीड़ी आदि कोई न कोई बुराई छोड़ने का संकल्प किया। यहां के एस० टी० डिपो में भी ड्राइवर-कंडक्टरों को भी राखी बांधी गई।

हरिद्वार : हरिद्वार और ऋषिकेश में भिन्न-भिन्न आठ स्थानों—मायापुरी, भीमगोडा, कम्यूनिटी सेण्टर आई०डी० पी०एल० आदि पर प्रोजैक्टर शो द्वारा परम पिता परमात्मा का परिचय दिया गया। आई० डी० पी० एल० फैक्ट्री के जनरल मैनेजर को उनके निवास स्थान पर राखी बांधी गई, उन्होंने क्रोध का दान दिया।

गाजियाबाद रक्षा बन्धन के अवसर सिविल जज, सेशन जज, मुंसिफ मैजिस्ट्रेट तथा एम० एल० ए० आदि को राखी बांधी गई। शाम को सार्वजनिक कार्यक्रम में प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भाग लिया। राखी का आध्यात्मिक रहस्य बताकर सभी को आत्म स्मृति का तिलक देकर राखी बांधी गई तथा सभी ने कोई न कोई बुराई दान में दी।

चन्द्रपूर कलक्टर, सिविल जज, तहसीलदार, सिविल सर्जन आदि को राखी बांधी गई। चन्द्रपुर के 400 कैदियों को भी पवित्रता की सूचक राखी बाँधकर शिव बाबा का संदेश दिया गया।

भरूच : जिला जेल के 100 कैदियों तथा भरूच तथा अंकलेश्वर बस डिपो में भी 130 ड्राइवर-कंडक्टरों को राखी बांधी गई। एक भाई ने पिछले साल बाँधी गई राखी जेब से निकाल कर दिखाई और बताया कि मैं यह राखी सदैव अपनी जेब में रखकर देखता रहता हूं कि मैंने शराब, बीड़ी, सिगरेट न पीने की प्रतिज्ञा की हुई है।

नादेड़ : जिला जेल के 120 कैदियों को राखी बाँधकर उनसे बुराइयाँ छोड़कर पवित्रता तथा गुण धारण करने की प्रतिज्ञा कराई। चिल्ड्रन होम के 20 बालकों तथा शासकीय रिमांड होम के 85 बालकों को भी अच्छा जीवन बनाने की प्रेरणा देते हुए राखी बांधी गई।

मिरजापुर : जिला कारागार में 300 कैदियों को आत्म स्मृति का तिलक लगाकर, बुराइयां छोड़ने की प्रतिज्ञा कराते राखी बांधी गई। जेलर साहिब, डिप्टी जेलर, जेल हास्पीटल के चिकित्सक तथा पुलिस स्टाफ को भी राखी बांधी गई। इसके बाद विकलांग आश्रम पर प्रवचन के बाद 40 विकलाँगो को राखी बांधी गई।

शिमला : राज्यपाल भ्राता अशोकनाथ बैनर्जी, मुख्य मंत्री रामलाल जी, अन्य मंत्रि मंडल के सदस्यों, सचिवों, पुलिस अधिकारियों, भूतपूर्व मुख्य मंत्री भ्राता शाँताकुमार जी तथा अन्य विशिष्ट व्यक्तियों को राखी बांधी गई।

बंगलौर : बंगलौर सिटी, तिरुपति, के० जी० टी०, नील मंगला, ढोढा बल्लापुर, गौरी बिदनौर, कुनीगल, अनेकल, पालामनेर तथा चितूर सेवा केन्द्रों की ओर से रक्षा बन्धन के पर्व पर एम० एल० ए०, धार्मिक व्यक्तियों, पुलिस अधिकारियों, शिक्षक वर्ग, वकील, डाक्टर वर्ग, व्यापारी वर्ग, तहसीलदारों आदि को राखी बांधी गई, कुल मिलाकर लगभग 600 भाई-बहिनों को राखी बाँधी गई। जन्माष्टमी के अवसर पर सुन्दर झाँकी सजाई गई, शोभा यात्रा निकाली गई।

भावनगर में अनेकानेक विशिष्ट व्यक्तियों ने सेवा केन्द्र पर आकर राखी बंधवाई। महुवा, सावा कुंडला, मोटी पापड़ी, उमराला, सिहारे, आंवला तथा भावनगर में विभिन्न स्थानों तथा अनेक मन्दिरों में प्रदर्शनी तथा प्रवचनों के विविध कार्यक्रम रखे गए। इसके अतिरिक्त सामाजिक-संस्थाओं—जिला जेल, वृद्धाश्रम, गूंगे-बहिरे गृह, अन्ध-शाला, तापी बाई विकास गृह, बालाश्रम, चाँर ए० टी० डिपो आदि में अनेक आत्माओं को कोई न कोई व्यसन छोड़ने की प्रतिज्ञा कराकर पवित्र राखी बाँधी गई।

मुजफ्फर नगर : शहर के लगभग 50 प्रतिष्ठित व्यक्तियों को जिनमें उत्तर प्रदेश के एक मन्त्री भ्राता बिद्याभूषण जी, जिलाधीश महोदय, एस० पी० महोदय, सिविल सर्जन आदि शामिल हैं, को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई।

बेलगाम में पवित्रता सप्ताह मनाया गया। इस सप्ताह

के अन्तर्गत अनेक सामाजिक संस्थाओं, बाल-महिला कल्याण विभाग, भारतीय डाक-तार विभाग, पुलिस वर्ग, अनाथ बालिका आश्रम, कर्नाटक भगिनी मंडल, कैदियों तथा जेलर्स, वकील वर्ग, विकलांगों आदि को परमपिता परमात्मा का परिचय दिया गया तथा रक्षा बन्धन का महत्त्व स्पष्ट किया गया।

कटक में 3 अगस्त को इंटरनेशनल रोटरी क्लब में समाज सुधार नामक विषय पर प्रवचन हुआ, सभी को राखी बाँधकर साहित्य भेंट किया गया। 6 अगस्त को महिला कालेज में "रक्षा बन्धन द्वारा चरित्र निर्माण" विषय पर प्रवचन हुआ तथा प्रोजैक्टर शो भी दिखाया गया। 4 अगस्त को लगभग 50 अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बाँधी गई।

हूबली में राजयोग सेवा केन्द्र का उद्घाटन समारोह मनाया गया, इस अवसर पर ब्र० कु० रमेश जी भी बम्बई से उपस्थित हुए। इसके अतिरिक्त यहाँ के म्यूनिसिपल कमिश्नर भाई पुरोहित जी का विदाई समारोह किया गया।

भोपाल में राज्यपाल भ्राता भगवत दयाल शर्मा, मुख्य मन्त्री भ्राता अर्जुनसिंह तथा अन्य मन्त्रिगण, न्यायधीश, सचिव, सम्पादकों सहित लगभग 40 विशिष्ट व्यक्तियों को राखी बाँधी गई।

पटना: बिहार के राज्यपाल भ्राता ए० आर० किदवई, मुख्यमन्त्री डा० जगन्नाथ मिश्रा जी, अन्य मन्त्री मण्डल के सदस्यों, न्यायाधीशों आदि लगभग 20 विशिष्ट व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बाँधी गई।

अमृतसर: राखी के अवसर पर 5000 पर्चे छपवाकर बाँटे गये, अखबारों में पंजाब केशरी, इंगलिश ट्रिब्यून आदि में राखी के सन्देश छापे गये। इसके अलावा इन्कमटैक्स अफीसर, डिविजनल टाऊन प्लैनर, व्यापारी वर्ग व अन्ध महाविद्यालय में राखी बाँधी। जन्माष्टमी पर सुन्दर चैतन्य झाँकियाँ सजाई गयीं।

अहमदाबाद (नारायणपुरा): रक्षा बन्धन के उपलक्ष्य में यहाँ सेन्टर पर ही गणमान्य व्यक्तियों का स्नेह मिलन रखा गया जिसमें लगभग 400 आत्माओं ने भाग लिया। उपसेवा केन्द्रों पर भी इसी प्रकार के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। जन्माष्टमी के अवसर पर भी विभिन्न स्थानों पर श्री कृष्ण की सुन्दर झाँकियाँ सजाई गई।

बुरहानपुर: प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बाँधी गई इसके अलावा रावेर, भुसावल, मलकपुर बुलढाणा आदि में रक्षाबन्धन का प्रोग्राम अच्छी तरह सफल रहा। अनेकानेक माननीय व्यक्तियों को राखी बाँधी गई। जन्माष्टमी पर झाँकियों द्वारा व प्रदर्शनी द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

सिकन्दराबाद: (आ० प्र०) रक्षा बन्धन के महोत्सव पर अपने ही सेवा केन्द्र पर पधारे हुए मुख्य व्यक्तियों को राखी बाँधी गई। तत्पश्चात् उन्हें राखी का महत्त्व समझाया गया।

पाली: रक्षा बन्धन के पावन पर्व पर पुलिस अधीक्षक, डाक्टर जेलर, उप जिलाधीश आदि माननीय व्यक्तियों को राखी बाँधी गई इसके अलावा सेवा केन्द्र पर बहुत से व्यक्ति पधारे थे इन्हें राखी बाँधी गयी। जन्माष्टमी पर झाँकी सजाई गयी प्रदर्शनी व प्रवचनों द्वारा जन-जन को ईश्वरीय सन्देश दिया गया।

पालम: (दिल्ली) इस पर्व पर लगभग 200 नये भाई-बहनों को बुलाकर राखी बाँधी गई जिसमें मुख्य रूप से वी० आई० पी० सम्मिलित हुए। खासकर मिलिट्री के अधिकारीगण थे। अन्माष्टमी पर सुन्दर झाँकियाँ भी सजाई गयी थी।

गुरदासपुर: यहाँ पर रक्षा बन्धन व जन्माष्टमी का त्योहार बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। पाँच स्थानों पर राखी बाँधी गयी जिनमें डी० सी०, एम० एल० ए०, म्यूनिसिपल कमिश्नर इत्यादि शामिल हैं। इस अवसर पर करीब 450 कैदियों को राखी बाँधी गयी।

मुलुन्द: (बम्बई) रक्षा बन्धन के निमित्त थाना में मेंटल हास्पीटल में दिव्यगीत और प्रवचन का प्रोग्राम रखा गया। इसके अलावा थाना सेन्ट्रल जेल में कैदियों को राखी बाँधी गयी।

भंडारा: उपसेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि बहनों ने अंध विद्यालय भंडारा में वहाँ के विद्यार्थियों को व कर्मचारियों, अध्यापकों को राखी बाँधी मुगास्वर्गीय कन्या बस्ती गृह व जेल में कैदियों को राखी बाँधी गई।

झाँसी: शहर के मुख्य व्यापारी, डी० एम०, एस० पी०, सेशन जज तथा अनेक प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने राखी बँधवाई। जन्माष्टमी के अवसर पर सेन्ट्रल जेल में तथा मिल्ट्री के अन्दर भी प्रोग्राम बना, जेल में कैदियों को भी अच्छी सेवा की गयी।

कल्याण : रक्षा बन्धन के अवसर पर जेल में कार्यक्रम हुआ और बिड़ला कालेज में भी सभी अध्यापकों को रक्षा बन्धन बाँधने का व प्रवचन का प्रोग्राम हुआ।

नागपुर : मध्यवर्ती कारागृह में 500 कैदी भाइयों को राखी बाँधी गयी। इसके अलावा डी० आई० जी० भ्राता महाजन जी को राखी बाँधी गयी। कुछ वी० आई० पी० को उनके निवास स्थान पर जाकर राखी बाँधी गयी। अंध विद्यालय में भी वहाँ के 200 विद्यार्थी और शिक्षकगण आदि को रक्षा बन्धन का महत्त्व समझाया गया।

मुजफ्फरपुर : रक्षा बन्धन के अवसर पर शिव बाबा का सन्देश सर्व को देने के लिए राखी का सन्देश छपवाकर बाँटा गया ताकि सर्व को लिखित रूप में सबको राखी का सन्देश पहुँच सके। शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बाँधी गयी। जन्माष्टमी का पर्व उत्साहपूर्वक प्रदर्शनी के साथ सम्पन्न हुआ।

इलाहाबाद हाईकोर्ट के वरिष्ठ न्यायमूर्ति भ्राता प्रेम शंकर गुप्ता, आयुक्त इलाहाबाद, डा० रामकुमार वर्मा, रेडियो डायरेक्टर तथा अन्य मुख्य व्यक्तियों को पावन राखी बाँधी गयी इस अलावा योग शिविर का भी विशेष प्रोग्राम रखा गया।

लखनऊ : रक्षा बंधन के पावन पर्व पर माननीय राज्यपाल, वित्तमंत्री, सिंचाई व उद्योग मन्त्री को पवित्रता की सूचक राखी बांधी गई तथा 1983 में माउन्ट आबू में होने वाले विश्व शांति सम्मेलन के लिए निमन्त्रण दिया गया।

संकेश्वर : सेवा केन्द्र पर ज्युडिशियल मैजिस्ट्रेट, तहसीलदार, एम० एल० ए० कौंसिलर, वकीलों, पुलिस कर्मचारियों स्कूल तथा कालेजों के प्रिंसीपल म्यूनिसिपल कमेटी के आफिसर्स, व्यापारी वर्ग तथा हरिजनों को विशेष रूप से निमंत्रित करके राखी का आध्यात्मिक रहस्य बताकर सभी को राखी बाँधी गई।

गोहाटी : न्यायधीशों, पुलिस सुपरिंटेंडेंट, रेडियो डायरेक्टर सुपरिंटेंडिंग इंनियर, पब्लिक रिलेशन आफिसर आदि २ विशिष्ट व्यक्तियों को पवित्रता की सूचक राखी बांधी गई। फैन्सी बाजार में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व प्रबचन का कार्यक्रम रखा गया, जिसका समाचार रेडियों तथा समाचार-पत्रों में भी प्रकाशित हुआ।

हिसार : आयुक्त महोदय, सी० एम० ओ०, भ्राता ओ० पी० महाजन तथा 40 अन्य नगर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधी गई। सेवा केन्द्र के नवनिर्मित भवन का उद्घाटन भी धूमधाम से मनाया गया।

पाटन : सेवा केन्द्र पर रक्षा बंधन का पर्व विशेष समाज सुधार एवं मानव-दिव्यीकरण के रूप में मनाया गया। स्नेह मिलन में सभी को राखी बांधकर एक अवगुण छोड़कर उसके स्थान पर एक सदगुण धारण करने का प्रतिज्ञा-पत्र भराया गया। सरकारी हास्पीटल में सुपरिटेंडेंट भ्राता मिश्रा जी के विशेष सहयोग से डाक्टर्स, नर्सों तथा रोगियों को राखी बाँधी गई और "राजयोग—दवाई और दुआ" विषय पर प्रवचन भी हुआ। इसके अतिरिक्त एस० टी० डिपो० के कर्मचारियों तथा कैदियों और पुलिस आफिसर्स को भी राखी बांधी गई। स्नेह मिलन के कार्यक्रम आयोजित किए गए।

ग्वालियर : रक्षाबंधन के अवसर पर ग्वालियर के केंद्रीय कारागार में आयोजित राखी के भव्य कार्यक्रम में आत्म-समर्पित विश्व कुख्यात डाकू मलखान सिंह एवं अन्य दस्युओं को "पवित्र बनो-योगी बनो" का प्रतीक राखी बांधी गई। योगयुक्त तथा स्नेह युक्त प्रवचन सुनकर सभी भावविभोर हो गए। तथा अपने विगत जन्म के पुराने संस्कारों को परमपिता को साक्षी करके समर्पित किया। इस अवसर पर भूतपूर्व समर्पित बागी पंचम भी उपस्थित थे, जिसने अपने जीवन परिवर्तन का अनुभव इन सभी डाकुओं को सुनाया। जेल सेवा के अतिरिक्त नगर के डी० आई० जी०, एस० पी० नगर प्रशासक, सैशन जज, जिला प्रशिक्षण अधिकारी आदि को भी राखी बाँधी गई।

पूने : पेरोड़ा सैंट्रल जेल में करीब 30 कैदियों और जेल अधिकारियों को राखी के महत्त्व बताकर राखी बांधी गई। सभी ने कोई न कोई बुराई छोड़कर गुण धारण करने की प्रतिज्ञा की। सायंकाल अर्टिफिशल लिम्ब सेंटर में सेना के अपंग 100 भाइयों को भी राखी बांधी गई।

अमरेली : सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि रक्षा बंधन के अवसर पर सब जेल और ओपन जेल के कैदियों को, अंधशाला के अंध जनों को, एस० टी० डिपो के ड्राइवर-कंडक्टर्स को तथा शहर के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को रक्षा बंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाकर राखी बांधी गई।

बड़ौदा : डमोई गांव के विशिष्ट व्यक्तियों का मिलन रखा गया, जिसमें डाक्टर्स, इंजीनियर्स, वकील, व्यापारीवर्ग आदि के समक्ष 'मानसिक तनाव कैसे दूर हो' विषय पर प्रवचन हुआ

पुरी : जिला मैजिस्ट्रैट तथा कलेक्टर, जिला न्यायाधीश, प्रिंसिपल, डी० एस० पी०, एस० डी० ओ०, रेलवे स्टाफ तथा विभिन्न वर्ग के प्रतिष्ठित व्यक्तियों को उनके निवास स्थान पर राखी बाँधी गई।

ब्रह्मपुर : सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि रक्षा बंधन का पावन पर्व बड़े हर्षोल्लास से मनाया गया। सभी को राखी बांधकर बापदादा के मधुर महा वाक्यों का एक एक छोटा कार्ड दिया गया। इसके अतिरिक्त जिला न्यायधीश, जेल अधिकारी एस० डी० ओ०, प्रिंसिपल, संवाददाताओं आदि प्रतिष्ठित व्यक्तियों को उनके निवास स्थान पर राखी बांधी गई।

फिरोजपुर छावनी में रेलवे के डिविजनल मैनेजर को डिविजनल मैडिकल आफिसर, डिप्टी कमिश्नर, पंजाब के कृषि मंत्री को रक्षा बंधन का संदेश दिया गया तथा 1983 में होने वाले विश्व शांति सम्मेलन का भी निमन्त्रण दिया।

रुड़की : स्थानीय जेल में जेल स्टाफ तथा लगभग 130 कैदियों को पवित्र राखी बांधी गई, सभी से विकारों को त्याग कर नए तरीके से जीवन व्यतीत करने की प्रतिज्ञा करवाई गई।

गोवा : यहां के सबसे बड़े उद्योग पति भ्राता डेंपो जीं तथा मुख्यमंत्री, शिक्षा मंत्री, मुख्य सचिव तथा अन्य लेखकारों को भी राखी बांधी गई।

तिनसुखिया : सेवाकेन्द्र से समाचार मिला है कि शिवसागर में ओ० एन० जी० सी० कालोनी में "राजयोग विश्वशांति आध्यात्मिक प्रदर्शनी" का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां के डिप्टी जनरल मैनेजर ने किया। इस प्रदर्शनी से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ उठाया।

उदयगीर में : रोटरी कलब के सदस्यों, कोर्ट के न्यायाधीश, प्रोफेसर्स तथा व्यापारी वर्ग के प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने सेवा केन्द्र पर आकर राखी बंधवाई तथा उन्हें 1983 की विश्व शांति सम्मेलन का निमन्त्रण भी दिया।

जालन्धर : स्थानीय समाचार पत्रों में राखी से सम्बन्धित लेख प्रकाशित किए गए। सैनिक, पुलिस, सिविल अधिकारियों, स्थानीय समाचार पत्रों के सम्पादकों, रेडियो दूरदर्शन के मुख्य अधिकारियों से भी सम्पर्क स्थापन किया गया तथा राखी बंधी गई। इसके अतिरिक्त स्थानीय जेल में लगभग 500 कैदियों को राखी बांधकर ईश्वरीय संदेश सुनाया गया।

सिरसा में दस प्रमुख व्यक्तियों को रक्षा बंधन का आध्यात्मिक रहस्य समझाकर पवित्र राखी बांधी गई, जिनमें एस० डी० एम०, एस० पी०, डी० एस० पी० आदि शामिल हैं।

भीलवाड़ा सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि जहाजपुर तहसील में त्रिदिवसीय राजयोग शिविर का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन वहां की नगर पालिका के चेयरमैन ने किया। इसके अतिरिक्त जहाज पुर जेल में प्रवचन एवं राजयोग शिविर का आयोजन किया गया।

सेंधवा : सेवा केन्द्र से शशि बहिन लिखती हैं कि खेतिया में विश्व नवनिर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई। इस प्रदर्शनी को हजारों लोगों ने देखा, परिणाम स्वरूप वहां गीता पाठशाला खुल गई है।

भटिंडा : सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि भटिंडा, मानसा में राखी का पावन पर्व धूमधाम से मनाया गया तथा जिलाधीश सैशन जज, तथा शहर के प्रमुख व्यक्तियों को राखी बांधी गई। यहां के स्थानीय समाचार पत्र भटिंडा टाइम्स में राखी के पावन पर्व का सुन्दर लेख भी प्रकाशित किया गया।

अजमेर : सेवा केन्द्र से समाचार मिला है कि शहर में रक्षा बंधन के पर्व पर माडल जेल में 315 कैदियों को राखी बांधी। जिनमें सभी ने कुछ न कुछ बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा की।

मेरठ सेवा केन्द्र से ससाचार मिला है कि यहां पर एक स्नेह मिलन रखा गया जिनमें वकील, डाक्टर, अध्यापकगण समाचार पत्रों के संवाददाताओं, डा० कर्नल जसवन्त सिंह तथा गायत्री मोदी जी ने भाग लिया तथा सभी को राखी बांधी गई। सभी ने कोई न कोई बुराई छोड़ने की प्रतिज्ञा की। इसके अतिरिक्त कुछ विशिष्ट व्यक्तियों—डी०एम०, ए० डी० एम०, कमिश्नर जुडिशियल मैजिस्ट्रेट, मुख्य चिकित्सा अधिकारी तथा डी० आई० जी० आदि को पवित्र राखी बांधकर 1983 में होने वाली शांति सम्मेलन का निमन्त्रण दिया।

सिरोही सेवा केन्द्र पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें व्यापारी वर्ग प्रोफेसर, डाक्टर एवं स्कूल के मास्टरों आदि को विशेष निमंत्रण पर बुलाकर पावन राखी बांधी व सभी ने किसी न किसी बुराई का दान दिया। तथा जिलाधीश महोदय, पुलिस अधीक्षक, चीफ ज्यूडि-

शियल मजिस्ट्रेट, सब डिविजनल मजिस्ट्रेट, जिला रसद अधिकारी, डिप्टी सुपरिन्टेन्डेंट एवं जेलर, बैंक मैनेजर इत्यादि को भी राखी बांधी गई। जन्माष्टमी पर मेन बाजार में चैतन्य झांकी को हजारों लोगों ने देखा।

ऊना में डिप्टीकश्नर, सैशन जज, सुपरिटेन्डेन्ट, जेलर आदि विशिष्ट व्यक्तियों को राखी बांधी गई। कैदियों को भी राखी बांधी गई इसके अलावा चीफ इंजीनियर भाखड़ा डैम, सुपरिटेन्डेन्ट स्टोर, सीनियर-स्टोर कीपर-भाखड़ा डैम आदि को राखी बांधी गई।

बरनाला में ऐयर फोर्स के कमान्डर एम०डी०ओ०, एम० पी०, मजिस्ट्रेट तहसीलदार सिविल सर्जन व अन्य माननीय व्यक्तियों को राखी बांधी गई। जन्माष्टमी के पावन पर्व पर ईश्वरीय संदेश देने हेतु अनेक सुन्दर व झांकियां चैतन्य बनाई गई।

श्री गंगा नगर में धान मंडी में एक आध्यात्मिक संग्रहालय का उद्घाटन राजस्थान क्षेत्रीय जोन इन्चार्ज द्वारा किया गया। दादी रत्न मोहनी जी ने बाबा का जन-जन को संदेश देने की प्रेरणा दी कि घर-२ में गीता पाठशाला खोलो, ३ पांव पृथ्वी के जहां भी मिल जावें वही बाबा का संदेश दो।

कोल्हापुर : कोल्हापुर शहर, इस्लामपुरां राधानगरी आदि स्थानों पर डिस्ट्रिकट पब्लिसिटी आफिसर, शिक्षण अधिकारी डाक्टर्स जिला परिषद अधिकारी आदि को राखी बांधी गई इसके अलावा जेल में ब अपंग भाई बहनों को भी राखी बाँधी गई।

लुधियाना में ईलायची गिर के हाल में आध्यात्मिक कार्यक्रम रखा गया। शहर के मुख्य व्यक्तियों को भी राखी बांधी गई। जन्माष्टमी महोत्सव पर भी कृष्ण की सुन्दर झांकी से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ लिया।

फतेहपुर में रक्षा बधन का पावन पर्व पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों को राखी बांधकर कष्ट पहुंचाने वाले अशुद्ध विचार व अशुद्ध वस्तुओं को छोड़ने के लिए आग्रह किया। इस अवसर पर बांदा जेल के कैदियों को विशेष सेवा की गई।

फरीदाबाद में प्रतिष्ठित व्यक्तियों, स्टेट मिनिस्टर, चीफ एडमिनिस्ट्रेटर, कमिश्नर, इत्यादि को राखी बांधी गई।

वर्धा : रक्षा बंधन पर्व पर प्रतिष्ठित व्यक्तियों के आलावा कैदियों को तथा जेलर साहब को भी राखी बांधी गई। इन लोगों ने शराब, बीड़ी, सिगरेट इत्यादि बुराइयों को छोड़ने की प्रतिज्ञा किया।

कलकत्ता : रक्षा बन्धन के उपलक्ष में म्यूजियम पर एक सार्वजनिक कार्यक्रम रखा गया। मुख्य अतिथि भ्राता भोला नाथ सैन बैरिस्टर उच्चन्यायालय थे। यह कार्यक्रम विशेष योग के साथ प्रारम्भ किया गया। इस पावन पर्व पर अनेक व्यक्तियों ने आश्रम पर ही आकर राखी बंधवाई इसके अलावा बहनों ने अनेक माननीय व्यक्तियों को उनके स्थान पर जाकर राखी बांधी।

जन्माष्टमी के पावन पर्व पर लक्ष्मी नारायण, राधाकृष्ण की चैतन्य झांकी सजाई गई जिसको हजारों लोगों ने देखा तथा लाभ उठाया।

सूरत : सेवा केन्द्र पर राखी का त्यौहार बड़े उत्साह के साथ मनाया, अनेक आत्माओं को राखी बांधी गई और बुराइयों को छोंड़ने के लिए कहा गया इसके अलावा जेल में अनेक कैदियों को राखी बांधी गई तथा पावन बनने का संदेश दिया गया।

इसके अलावा निम्नलिखित स्थानों से रक्षा बन्धन पर वी० आई० पी० को राखी बाँधने व जन्माष्टमी पर विशेष चैतन्य झाँकियों द्वारा ईश्वरीय पैगाम देने का उत्साहवर्धक समाचार मिला है।

जाम नगर, अमलनेर, झुँझुन, तलवाड़ा, सोलन, धर्मशाला, सतारा, बारबडोस, गुमला, अकोला, बरेली, बापू नगर, सीरसी, कपूरथला, कुल्लू, रायगढ़, आर्वी, जयपुर, महू, होशियारपुर, जोधपुर, बाड़मेर, अमरावती, मेहसाना, उदयपुर, साँगली, गाजियाबाद लोहिया नगर, कलोल, मऊनाथ भंजन, पोखरा (नेपाल) हाँसी, बेलगाम, डेरावसी, नवसारी, मजलिस पार्क, साँपला, आगरा, आनन्द, पालमपुर, सिकन्दराबाद, कुरुक्षेव, दिल्ली व नई दिल्ली।

जगदीश चन्द्र हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, बी 9/19 कृष्ण नगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा गगन प्रिण्टर्स, कृष्ण नगर, दिल्ली-51 से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70